अगस्त 2026

हिन्दी मासिक पत्रिका | ₹10

मुकुंद लेखनी



चेहरा योगी का...
रणनीति तावड़े की...
जीत वाला फार्मूला बिहार का...

— तो ऐसे यूपी चुनाव 2027 में —

बीजेपी लगाएगी हैट्रिक!

योगी का मजबूत चेहरा
विकास, सुशासन और कानून-व्यवस्था पर फोकस

तावड़े की जीताऊ रणनीति
संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने की तैयारी

सहयोगी दलों के साथ मजबूत तालमेल
हर वर्ग और हर क्षेत्र तक पहुंच बनाने की रणनीति

मिशन 2027
लगातार तीसरी बार यूपी में बीजेपी सरकार बनाने का संकल्प



मेरे सम्मानित प्रदेशवासियों,

रक्षाबंधन भाई की कलाई पर बंधने वाला **रक्षा-सूत्र मात्र नहीं, अपितु स्नेह, विश्वास और संकल्प का पावन पर्व है, जो परिवार को जोड़ता है,** समाज में आत्मीयता जगाता है तथा बहन-बेटियों के सम्मान, सुरक्षा एवं स्वाभिमान के प्रति अपने दायित्व का स्मरण कराता है। 'श्रावण पूर्णिमा' के पावन अवसर पर इस वर्ष 28 अगस्त को मनाया जाने वाला यह पर्व हमारे सनातन संस्कारों की इसी सुदृढ़ परंपरा का प्रतीक है।

इस पर्व से जुड़ी कथाएं भी स्नेह और संरक्षण के इसी भाव को साकार करती हैं। लोक परंपरा में कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण की उंगली से रक्त बहता देख द्रौपदी ने अपनी साड़ी का किनारा फाड़कर बांध दिया। **द्रौपदी के इस स्नेह का प्रत्युत्तर श्रीकृष्ण ने संकट के समय उनकी रक्षा करके दिया।** इसी प्रकार, राजा बलि को रक्षा-सूत्र बांधकर माता लक्ष्मी ने उन्हें अपना भाई बनाया और भगवान विष्णु को अपने साथ ले आईं। ये प्रसंग बताते हैं कि स्नेह केवल संबंध नहीं बनाता, वह दायित्व और संरक्षण का भाव भी जगाता है।

आज जब नई पीढ़ी तकनीकी उन्नयन के साथ आगे बढ़ रही है, तब इन संस्कारों को अपने आचरण का अंग बनाना और विवेक, सद्भाव एवं सामाजिक एकता को महत्व देना पहले से अधिक आवश्यक है। यही संस्कार हमारे परिवारों को सुदृढ़ करते हैं, समाज को एकजुट रखते हैं और संविधान की प्रस्तावना में निहित समानता, बंधुता और सामाजिक समरसता के भाव को सशक्त करते हुए राष्ट्र को शक्ति प्रदान करते हैं।

रक्षा का यही भाव एक संवेदनशील सरकार के संकल्प में भी दिखाई देता है। **हमारी सरकार ने विगत साढ़े नौ वर्षों में बहन-बेटियों की सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है।** मिशन शक्ति तथा मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना ने बेटियों की सुरक्षा, शिक्षा और प्रगति को गति दी है। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह और निराश्रित महिला पेंशन योजना से सामाजिक सुरक्षा मिली है। महिला उद्यमी क्रेडिट कार्ड आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। **रक्षाबंधन पर वर्ष 2017 से प्रारंभ की गई माताओं-बहनों के लिए निःशुल्क बस यात्रा की सुविधा इस वर्ष भी 27 से 29 अगस्त तक मिलेगी। इससे सुगम एवं सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित होगी।**

सभी प्रदेशवासियों को रक्षा बंधन की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। मेरा आप सबसे आग्रह है कि रक्षा-सूत्र के संकल्प को अपने आचरण का हिस्सा बनाएं। **प्रत्येक बहन-बेटी के सम्मान और सुरक्षा का संकल्प लें। सुरक्षाबल, पुलिसकर्मियों और आपदा राहतकर्मियों को रक्षा-सूत्र बांधकर उनके प्रति अपनत्व और कृतज्ञता प्रकट करें। साथ ही, स्थानीय स्तर पर निर्मित राखियों एवं उपहारों को प्राथमिकता दें।** आपका यह प्रयास स्थानीय श्रम, कौशल और उद्यम को प्रोत्साहन देगा तथा आत्मनिर्भर एवं विकसित उत्तर प्रदेश के संकल्प को और सुदृढ़ करेगा।



आपका

योगी आदित्यनाथ

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

सशक्त नारी, समृद्ध प्रदेश

वर्ष : 01, अंक : 01, अगस्त -2026

UPHIN/26/A6820

इस अंक में 1



7 भारतीय वास्तुकला में सौंदर्य और आध्यात्मिकता का समन्वय



12 भाजपा का सांगठनिक पुनर्गठन का गहरा संदेश: क्या आगामी चुनावों की अंतिम तैयारी है ?



16 500 साल से बंद थी राजा की कब्र....



24 आखिर जन सुराज पार्टी और लोजपा...

मुकुंद लेखनी

–संपादक–

सौरभ भट्ट
मो.– 9918888489

उत्तर प्रदेश ब्यूरो
अशोक मिश्रा
मो.– 6393514145

संपादकीय कार्यालय
आवास नं0 : 33,
साईं रेजिडेंसी, उत्तरधौना,
लखनऊ,
उत्तर प्रदेश – 226028

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक सौरभ भट्ट के द्वारा आवास नं0 : 33, साईं रेजिडेंसी, उत्तरधौना, लखनऊ, उत्तर प्रदेश – 226028 से प्रकाशित तथा लक्ष्मी ऑफसेट 539क/100क/240, देवपुरी भवन, संजय गांधी पुरम, फैजाबाद रोड लखनऊ से मुद्रित।

सौरभ भट्ट
सम्पादक
मो.– 9918888489

हमें अपने पाठकों की प्रतिक्रिया और विचारों को जानना अच्छा लगेगा। यदि पत्रिका की किसी भी सामग्री पर आपको आपत्ति है, तो कृपया हमें अपने सुझाव भेजें।

हम नए लेखों का भी स्वागत करते हैं! यदि आप किसी विषय पर लेख भेजना चाहते हैं, तो कृपया उसे हमें भेजें। हम आपके लेख पर विचार करेंगे।

ईमेल पता : mukundlekhni@gmail.com
फोन नंबर : 9918888489

पत्रिका में समस्त विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय मान्य होगा।



सौरभ भट्ट
संपादक

तकनीक के साए में पलती एक नई क्रांति: जेन अल्फा

डिजिटल युग की गूंज के बीच पली-बढ़ी पीढ़ी—'जेन अल्फा' (2010 के बाद जन्मे बच्चे)—अब सिर्फ स्क्रीन तक सीमित नहीं रही है। यह पीढ़ी तकनीक को खिलौना नहीं, बल्कि दुनिया बदलने का औजार मानकर अपने अधिकारों, पर्यावरण और भविष्य के लिए खुलकर आवाज उठाने लगी है।

अधिकारों के प्रति बेबाक चेतना

अपनी पूर्ववर्ती 'जेन जी' से सीख लेते हुए, जेन अल्फा ने बेहद कम उम्र में सामाजिक और वैश्विक मुद्दों की समझ विकसित कर ली है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के जरिए दुनिया से जुड़ी यह पीढ़ी मानवाधिकार, लैंगिक समानता, मानसिक स्वास्थ्य और समावेशिता जैसे गंभीर विषयों पर बिना किसी झिझक के अपनी बात रख रही है। स्कूल के कमरों से लेकर डिजिटल मंचों तक, इनकी सक्रियता यह साबित करती है कि वे खुद को केवल भविष्य का नागरिक नहीं, बल्कि आज का हितधारक मानते हैं।

पर्यावरण और शिक्षा में बदलाव की मांग

जलवायु परिवर्तन के संकट को इस पीढ़ी ने बहुत करीब से महसूस किया है। जेन अल्फा केवल किताबी ज्ञान से संतुष्ट नहीं है; वे व्यावहारिक और टिकाऊ समाधानों की मांग कर रहे हैं। वे ऐसी शिक्षा व्यवस्था चाहते हैं जो उन्हें केवल नौकरियों के लिए तैयार न करे, बल्कि जीवन के व्यावहारिक संकटों से निपटना भी सिखाए।

चुनौतियां और जिम्मेदारियां

यह सच है कि अत्यधिक डिजिटल निर्भरता और साइबर स्पेस के खतरे इस पीढ़ी के लिए मानसिक दबाव पैदा कर रहे हैं। परंतु, जिस परिपक्वता के साथ ये बच्चे अपने हक और समाज की भलाई के लिए खड़े हो रहे हैं, वह निसंदेह सराहनीय है।

अभिभावकों, नीति निर्धारकों और समाज की जिम्मेदारी है कि वे इस नई आवाज को 'बचपना' समझकर खारिज न करें। जेन अल्फा की इस चेतना को सही दिशा, मार्गदर्शन और सुरक्षित मंच देना समय की सबसे बड़ी मांग है, ताकि इनका यह आक्रोश एक सकारात्मक सामाजिक बदलाव का आधार बन सके।



तलाक के बाद पुरुषों की जिंदगी में पारिवारिक और सामाजिक असर



गुरसेवक सिंह सलूजा

तलाक किसी भी व्यक्ति के जीवन में आने वाला ऐसा मोड़ है, जो केवल पति-पत्नी के रिश्ते को समाप्त नहीं करता, बल्कि परिवार, बच्चों, रिश्तेदारों और सामाजिक संबंधों को भी गहराई से प्रभावित करता है। अक्सर तलाक के बाद महिलाओं की चुनौतियों पर अधिक चर्चा होती है, जबकि पुरुषों के मानसिक, पारिवारिक और सामाजिक संघर्ष अपेक्षाकृत कम दिखाई देते हैं। वास्तविकता यह है कि तलाक के बाद पुरुष भी अकेलेपन, सामाजिक दबाव, पारिवारिक दूरी और बच्चों से जुड़े भावनात्मक संघर्षों से गुजर सकते हैं।

तलाक के बाद पुरुष के पारिवारिक जीवन में सबसे बड़ा बदलाव उसकी दिनचर्या और पारिवारिक भूमिका का होता है। विवाह के दौरान घर-परिवार की जो जिम्मेदारियां पति-पत्नी मिलकर निभाते हैं, अलगाव के बाद उनका स्वरूप बदल जाता है। कई बार पुरुष को अलग घर में रहना पड़ता है और परिवार के साथ बिताया जाने वाला समय अचानक कम हो जाता है। लंबे समय से बनी जीवनशैली में आए इस बदलाव को स्वीकार करना आसान नहीं होता।

माता-पिता और रिश्तेदारों की भूमिका भी इस दौर में महत्वपूर्ण हो जाती है। कुछ परिवार तलाक के बाद पुरुष को भावनात्मक सहारा देते हैं, लेकिन कई मामलों में उसे ही रिश्ते के टूटने के लिए जिम्मेदार मान लिया जाता है। रिश्तेदारों के सवाल, सामाजिक टिप्पणियां और निजी जीवन को लेकर लगातार पूछताछ व्यक्ति के तनाव को बढ़ा सकती है। पुरुषों से अक्सर यह अपेक्षा की जाती है कि वे हर परिस्थिति में मजबूत रहें, जबकि उनके भीतर चल रही भावनात्मक उथल-पुथल को समझने की कोशिश कम होती है।

बच्चों से जुड़ा रिश्ता तलाक के बाद सबसे संवेदनशील विषयों में से एक है। यदि बच्चे किसी एक अभिभावक के साथ रहते हैं तो दूसरे अभिभावक के लिए उनके साथ नियमित संपर्क

बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। बच्चों को माता-पिता के विवाद से दूर रखना और दोनों के साथ उनका स्वस्थ संबंध बनाए रखना बेहद जरूरी है। पति-पत्नी के मतभेद अपनी जगह हो सकते हैं, लेकिन बच्चों का भविष्य दोनों की साझा जिम्मेदारी है।

तलाक का असर पुरुष के सामाजिक जीवन पर भी पड़ता है। विवाह के दौरान बने कई संबंध पति-पत्नी के साझा मित्रों और रिश्तेदारों के माध्यम से होते हैं। अलगाव के बाद इनमें से कुछ रिश्ते कमजोर पड़ सकते हैं। सामाजिक समारोहों में भी तलाकशुदा व्यक्ति को कभी-कभी असहज परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।

समाज में आज भी तलाक को लेकर अनेक पूर्वाग्रह मौजूद हैं। तलाकशुदा पुरुष से बार-बार पूछा जाना कि विवाह क्यों टूटा या अब दोबारा शादी कब करेंगे, उसके लिए असहज स्थिति पैदा कर सकता है। किसी व्यक्ति के निजी जीवन को सार्वजनिक चर्चा का विषय बना देना उचित नहीं है। तलाक के कारणों को जाने बिना किसी एक पक्ष को दोषी ठहराना भी सामाजिक रूप से संवेदनशील व्यवहार नहीं कहा जा सकता।

आर्थिक जिम्मेदारियां भी तलाक के बाद बदल जाती हैं। अलग रहने का खर्च, बच्चों की शिक्षा और पालन-पोषण से संबंधित जिम्मेदारियां तथा कानूनी प्रक्रिया से जुड़े खर्च कई बार आर्थिक दबाव बढ़ा देते हैं। हालांकि आर्थिक जिम्मेदारियों को केवल पुरुष की समस्या मानना उचित नहीं है। बच्चों की जरूरतों और भविष्य के प्रति माता-पिता दोनों की जिम्मेदारी होती है और उन्हें अपनी कानूनी तथा पारिवारिक जिम्मेदारियां ईमानदारी से निभानी चाहिए।

तलाक के बाद पुरुषों के जीवन का एक महत्वपूर्ण लेकिन अक्सर अनदेखा पक्ष उनका भावनात्मक संघर्ष है। पुरुषों को बचपन से ही अपनी भावनाओं को दबाकर रखने और मजबूत बने रहने की सीख दी जाती है। परिणामस्वरूप कई पुरुष दुख, अकेलापन, अपराधबोध या असुरक्षा के बारे में खुलकर बात नहीं कर पाते। बाहर से सामान्य दिखाई देने वाला व्यक्ति भीतर से गंभीर मानसिक दबाव से गुजर सकता है।

ऐसे समय में परिवार और मित्रों का सहयोग बेहद महत्वपूर्ण है। अपनी भावनाओं को विश्वसनीय लोगों के साथ साझा करना, स्वस्थ दिनचर्या बनाना और जरूरत पड़ने पर विशेषज्ञ की मदद लेना कमजोरी नहीं, बल्कि समझदारी है। तलाक के बाद व्यक्ति को अपने जीवन को नए सिरे से व्यवस्थित करने के लिए समय और सकारात्मक वातावरण की आवश्यकता होती है।

यह भी समझना जरूरी है कि तलाक जीवन का अंत नहीं है। यह निश्चित रूप से एक कठिन अनुभव हो सकता है, लेकिन इसके बाद व्यक्ति अपने जीवन की नई दिशा तय कर सकता है। अपने स्वास्थ्य, काम, परिवार, मित्रों और व्यक्तिगत लक्ष्यों पर ध्यान देकर जीवन को दोबारा व्यवस्थित किया जा सकता है। भविष्य में दोबारा विवाह का निर्णय भी सामाजिक दबाव में नहीं, बल्कि भावनात्मक तैयारी और परिस्थितियों को समझकर किया जाना चाहिए।

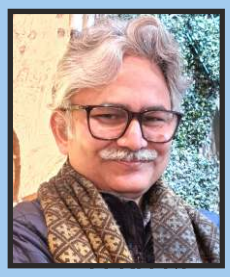
समाज को भी अपनी सोच में बदलाव लाने की आवश्यकता है। तलाकशुदा पुरुष को असफल या कमजोर व्यक्ति के रूप में देखने के बजाय उसे एक ऐसे इंसान के रूप में देखना चाहिए जिसने जीवन की एक कठिन परिस्थिति का सामना किया है। इसी प्रकार महिलाओं के प्रति भी समान संवेदनशीलता और सम्मान जरूरी है। तलाक के बाद किसी एक पक्ष की पीड़ा को समझने के लिए दूसरे पक्ष की पीड़ा को नकारना उचित नहीं है।

अंततः तलाक केवल कानूनी संबंध-विच्छेद नहीं, बल्कि सामाजिक और पारिवारिक परिवर्तन भी है। इसके बाद पुरुषों की जिंदगी में रिश्तों, बच्चों, आर्थिक जिम्मेदारियों, सामाजिक पहचान और भावनात्मक स्थिति से जुड़े अनेक बदलाव आते हैं। ऐसे समय में उन्हें ताने, आरोप और सामाजिक दूरी के बजाय समझ, सम्मान और सहयोग की आवश्यकता होती है।

तलाक किसी व्यक्ति की पूरी जिंदगी की कहानी नहीं होता। यह जीवन का एक कठिन अध्याय हो सकता है, जिसके बाद सम्मान और आत्मविश्वास के साथ एक नई शुरुआत संभव है।



भारतीय वास्तुकला में सौंदर्य और आध्यात्मिकता का समन्वय





भारतीय कला की परंपरा अत्यंत व्यापक, गहन और बहुस्तरीय है, जिसमें चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य और साहित्य जैसी विविध विधाएँ सम्मिलित होकर एक समग्र सांस्कृतिक चेतना का निर्माण करती हैं। इन सभी कलाओं के बीच स्थापत्य कला एक ऐसे सुदृढ़ और आधारभूत स्तंभ के रूप में प्रतिष्ठित है, जिस पर संपूर्ण भारतीय जीवन-दृष्टि का विशाल भवन खड़ा दिखाई देता है। यह केवल कला का एक रूप नहीं, बल्कि सभ्यता की वह भाषा है जिसमें समय, समाज और संस्कृति अपनी सबसे स्थायी अभिव्यक्ति प्राप्त करते हैं। जब हम भारतीय स्थापत्य की चर्चा करते हैं, तो हमारा ध्यान केवल भवनों, मंदिरों, महलों या स्मारकों की भौतिक संरचनाओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह उस गहन दार्शनिक और आध्यात्मिक परंपरा की ओर संकेत करता है जिसमें मानव ने अपने अस्तित्व, प्रकृति और ब्रह्मांड के बीच एक गूढ़ संबंध की खोज की है। भारतीय सभ्यता में कला कभी केवल सौंदर्य की बाह्य अभिव्यक्ति नहीं रही। यहाँ सौंदर्य को सदैव एक आंतरिक सत्य के रूप में देखा गया है, जो किसी न किसी आध्यात्मिक या दार्शनिक अर्थ से जुड़ा होता है। इसीलिए भारतीय स्थापत्य में प्रत्येक रेखा, प्रत्येक अनुपात और प्रत्येक संरचना केवल दृश्य आकर्षण के लिए नहीं, बल्कि एक गहरे प्रतीकात्मक संदेश को व्यक्त करने के लिए निर्मित की गई है। यहाँ पत्थर भी केवल जड़ पदार्थ नहीं रहता, वह विचारों का वाहक बन जाता है और स्थान केवल भौगोलिक इकाई नहीं रहता, वह चेतना का विस्तार बन जाता है। इसी कारण भारतीय स्थापत्य को एक ऐसी दृश्य भाषा के रूप में देखा जा सकता है जो बिना शब्दों के भी जीवन और अस्तित्व के सबसे जटिल प्रश्नों को व्यक्त कर देती है।

भारतीय चिंतन परंपरा में 'वास्तु' की अवधारणा इसी समग्र दृष्टि का अत्यंत महत्वपूर्ण विस्तार है। वास्तु केवल निर्माण की तकनीकी विधि नहीं है, बल्कि यह जीवन को संतुलित, सुव्यवस्थित और सामंजस्यपूर्ण बनाने की एक सूक्ष्म दार्शनिक प्रणाली है। इसमें दिशाओं की ऊर्जा, स्थान की प्रकृति, प्रकाश और वायु के प्रवाह, तथा मानव चेतना के आपसी संबंधों को अत्यंत गहराई से समझने का प्रयास किया गया है। यह मान्यता रही है कि जिस स्थान में मनुष्य निवास करता है, वह केवल उसके भौतिक जीवन को ही नहीं, बल्कि उसके विचारों, भावनाओं और मानसिक अवस्था को भी प्रभावित करता है। इसलिए वास्तु के माध्यम से ऐसे स्थानों की रचना का प्रयास किया गया जहाँ बाह्य और आंतरिक संतुलन एक-दूसरे के पूरक बन सकें। भारतीय परंपरा में भवन निर्माण को कभी केवल उपयोगिता की दृष्टि से नहीं देखा गया। यहाँ प्रत्येक संरचना को एक जीवंत इकाई के रूप में कल्पित किया गया है, जो मनुष्य के जीवन में सक्रिय भूमिका निभाती है। मंदिर हो या राजमहल, आश्रम हो या नगर-योजना, प्रत्येक स्थान को इस प्रकार निर्मित किया गया कि वह मानव अनुभव को गहराई और व्यापकता प्रदान कर सके। मंदिरों की संरचना में गर्भगृह से लेकर शिखर तक की यात्रा केवल भौतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक आरोहण का प्रतीक मानी गई है। प्रवेश द्वार से भीतर की ओर बढ़ना एक प्रकार से बाह्य जगत से आंतरिक जगत की यात्रा के समान है, जहाँ मनुष्य अपने भीतर स्थित चेतना के केंद्र की ओर अग्रसर होता है।

इसी दृष्टि से भारतीय स्थापत्य में भवन केवल निवास या उपासना का स्थान नहीं रह जाता, बल्कि वह एक ऐसा माध्यम बन जाता है जिसके माध्यम से मनुष्य स्वयं को और अधिक गहराई से समझने का प्रयास करता है। यहाँ स्थान केवल घेरने की वस्तु नहीं, बल्कि अनुभव को रूप देने वाली शक्ति है। इसीलिए भारतीय स्थापत्य में सममिति, संतुलन, अनुपात और दिशा का इतना गहन महत्व है, क्योंकि यह माना गया कि बाहरी संरचना का संतुलन ही आंतरिक मनोवस्था को भी संतुलित करता है। इस प्रकार भारतीय स्थापत्य कला एक ऐसी समग्र दृष्टि का परिणाम है जिसमें भौतिकता और आध्यात्मिकता, उपयोगिता और सौंदर्य, तथा

विज्ञान और दर्शन एक साथ प्रवाहित होते हैं। यह केवल पत्थरों की रचना नहीं, बल्कि जीवन के अर्थ को आकार देने की प्रक्रिया है। यहाँ निर्मित प्रत्येक संरचना मनुष्य को यह स्मरण कराती है कि वह केवल भौतिक संसार का भाग नहीं, बल्कि एक व्यापक ब्रह्मांडीय व्यवस्था का भी अंग है, जहाँ प्रत्येक रूप अपने भीतर किसी न किसी गूढ़ सत्य को संजोए हुए है।

इस व्यापक परंपरा की गहराई को समझने के लिए जब हम इतिहास की परतों को धीरे-धीरे खोलते हैं तो अजंता और एलोरा जैसी गुफाएँ किसी साधारण पुरातात्त्विक अवशेष के रूप में नहीं, बल्कि जीवित सांस्कृतिक स्मृति के रूप में सामने आती हैं। ये संरचनाएँ उस युग की सृजनात्मक चेतना का साक्षात प्रमाण हैं, जिसमें कला केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि साधना, विश्वास और जीवन-दर्शन का अविभाज्य अंग थी। शैल-निर्मित इन गुफाओं में पत्थर केवल काटा या तराशा नहीं गया, बल्कि उसे एक ऐसे संवेदनशील माध्यम में रूपांतरित किया गया, जो मनुष्य के भीतर स्थित गहन भावों को बाहर लाने में सक्षम हो सका। अजंता की गुफाएँ बौद्ध दर्शन की करुणा, शांति और आत्मिक स्थिरता का ऐसा दृश्य रूप हैं, जहाँ कला और अध्यात्म एक-दूसरे में घुल-मिल जाते हैं। यहाँ चित्रकला किसी सजावटी उद्देश्य तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह ध्यान और साधना की एक गहन प्रक्रिया का परिणाम प्रतीत होती है। दीवारों पर उकेरे गए बुद्ध के जीवन प्रसंग केवल ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण नहीं करते, बल्कि वे मानव चेतना की उन अवस्थाओं का संकेत देते हैं जहाँ दुःख, करुणा, त्याग और ज्ञान एक सतत प्रवाह में दिखाई देते हैं। जातक कथाओं के चित्रण में पशु-पक्षियों, मनुष्यों और प्रकृति के बीच जो संबंध उभरता है, वह इस बात का संकेत है कि उस समय जीवन को खंडों में नहीं, बल्कि एक समग्र इकाई के रूप में देखा जाता था। रंगों की कोमलता, रेखाओं की प्रवाहमयता और भावों की गहराई मिलकर एक ऐसा दृश्य संसार रचते हैं, जो दर्शक को केवल देखने वाला नहीं रहने देता, बल्कि उसे अनुभव की प्रक्रिया में सम्मिलित कर लेता है।

एलोरा की गुफाएँ इस कलात्मक और दार्शनिक परंपरा को और अधिक विस्तृत और जटिल धरातल प्रदान करती हैं। यहाँ बौद्ध, जैन और हिंदू परंपराओं का एक ही भौगोलिक परिसर में सह-अस्तित्व भारतीय संस्कृति की उस अद्वितीय क्षमता का परिचायक है जिसमें भिन्न विचारधाराएँ संघर्ष का कारण नहीं बनतीं, बल्कि एक व्यापक सांस्कृतिक संवाद का रूप ग्रहण करती हैं। यह सह-अस्तित्व केवल बाह्य सहभाव नहीं है, बल्कि एक गहरी मानसिक और दार्शनिक स्वीकार्यता का परिणाम है, जहाँ विविधता को विरोध नहीं, बल्कि समृद्धि का स्रोत माना गया है। एलोरा की प्रत्येक गुफा अपने भीतर एक अलग संसार समेटे हुए है, फिर भी वे सभी मिलकर एक साझा सांस्कृतिक चेतना का निर्माण करती हैं। इसी समन्वयकारी दृष्टि का सर्वाधिक प्रभावशाली और विस्मयकारी रूप कैलाश मंदिर में दृष्टिगोचर होता है। एक ही विशाल शिलाखंड को ऊपर से नीचे की ओर तराशकर निर्मित यह मंदिर केवल स्थापत्य कौशल का उदाहरण नहीं, बल्कि मानव कल्पना और श्रम की सीमाओं का अतिक्रमण है। यह निर्माण प्रक्रिया अपने आप में एक असाधारण उपलब्धि है, जिसमें किसी जोड़ या निर्माण सामग्री के संयोजन के बजाय सम्पूर्ण संरचना को एक ही पत्थर में रूपांतरित कर दिया गया है। यह तथ्य ही इस स्थापत्य को साधारण भौतिक निर्माण से ऊपर उठाकर एक आध्यात्मिक प्रतीक में बदल देता है। कैलाश मंदिर की भव्यता केवल उसके आकार या तकनीक में नहीं है, बल्कि उस भाव में निहित है जिसमें मनुष्य ने पत्थर को भी जीवन, गति और चेतना का रूप देने का प्रयास किया है। यहाँ शिल्प केवल शिल्प नहीं रहता, वह एक ऐसी भाषा बन जाता है जिसमें धैर्य, समर्पण और विश्वास एक साथ बोलते हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो यह सम्पूर्ण संरचना मानव संकल्प की उस ऊँचाई का प्रतीक हो, जहाँ असंभव भी संभवता के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार अजंता और एलोरा की परंपरा केवल ऐतिहासिक महत्व की नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की उस गहरी आत्मा का परिचय देती है जिसमें कला, धर्म और दर्शन एक अविभाज्य इकाई के रूप में प्रवाहित होते हैं।

इसी परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और विचारोत्तेजक विस्तार खजुराहो के मंदिरों में देखा जा सकता है, जहाँ भारतीय स्थापत्य कला अपनी संपूर्णता और निर्भीक अभिव्यक्ति के साथ उपस्थित होती है। ये मंदिर केवल धार्मिक उपासना के केंद्र नहीं हैं, बल्कि उस सांस्कृतिक चेतना के साक्ष्य हैं जिसमें जीवन को किसी संकीर्ण दृष्टि से नहीं, बल्कि उसकी समग्रता में स्वीकार किया गया है। यहाँ शिल्प केवल देव-प्रतिमाओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि मानव जीवन के विविध अनुभवों, भावों और स्थितियों को भी समान कलात्मक गरिमा के साथ स्थान देता है। यह तथ्य स्वयं में इस बात का संकेत है कि भारतीय परंपरा ने जीवन के किसी भी पक्ष को अस्वीकार्य या निम्न नहीं माना, बल्कि प्रत्येक अनुभव को अस्तित्व की व्यापक यात्रा का अंग समझा। खजुराहो की मूर्तिकला में लौकिक और आध्यात्मिक का ऐसा संतुलन दिखाई देता है, जो भारतीय दर्शन की मूल प्रवृत्ति को स्पष्ट करता है। यहाँ मानव जीवन के प्रेम, सौंदर्य, संबंध, उत्सव और रागात्मकता जैसे पक्ष किसी विरोधाभास के रूप में नहीं, बल्कि जीवन की स्वाभाविक अभिव्यक्तियों के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। यह दृष्टि इस गहरे विश्वास पर आधारित है कि जब तक जीवन पूर्णता में स्वीकार नहीं किया जाता, तब तक आध्यात्मिक उन्नति भी अधूरी रहती है। इसीलिए खजुराहो की कला किसी प्रकार के निषेध या दमन का संकेत नहीं देती, बल्कि वह जीवन के संपूर्ण अनुभव को एक सतत प्रवाह के रूप में देखने की प्रेरणा देती है, जहाँ प्रत्येक क्षण किसी न किसी रूप में आत्मिक विकास से जुड़ा हुआ है। इन मंदिरों की शिल्प-भाषा में जो सूक्ष्मता और जीवंतता दिखाई देती है, वह केवल तकनीकी कौशल का परिणाम नहीं है, बल्कि उस युग की गहरी दार्शनिक समझ का प्रतिबिंब है जिसमें मानव शरीर, मन और आत्मा को एक-दूसरे से पृथक नहीं माना गया। यहाँ रूप और अर्थ, दृश्य और अदृश्य, भौतिक और आध्यात्मिक के बीच कोई कठोर विभाजन नहीं दिखाई देता। यही कारण है कि खजुराहो की कला केवल देखने की वस्तु नहीं रह जाती, बल्कि वह चिंतन और आत्मबोध की प्रक्रिया को भी सक्रिय करती है।

इसी व्यापक स्थापत्य परंपरा का एक और अद्वितीय रूप कोणार्क के सूर्य मंदिर में प्रकट होता है, जहाँ स्थापत्य और प्रतीकात्मकता का ऐसा अद्भुत संगम मिलता है जो समय, गति और ब्रह्मांडीय लय को एक मूर्त रूप प्रदान करता है। रथ के आकार में निर्मित यह भव्य मंदिर केवल एक धार्मिक संरचना नहीं, बल्कि ब्रह्मांड की गतिशील व्यवस्था का एक सजीव रूपक है। इसमें सूर्य देवता को केंद्र में रखकर सम्पूर्ण संरचना को एक ऐसे रथ के रूप में कल्पित किया गया है जो अनवरत गति का प्रतीक है, और यह गति ही जीवन, समय और अस्तित्व का मूल आधार बन जाती है। कोणार्क के विशाल पत्थर के पहिए इस दार्शनिक दृष्टि को और अधिक गहराई प्रदान करते हैं। बारह जोड़ी पहिए केवल स्थापत्य अलंकरण नहीं हैं, बल्कि वे वर्ष के बारह महीनों, समय के चक्र और जीवन की निरंतर परिवर्तनशीलता का प्रतीक हैं। प्रत्येक पहिया मानो यह संकेत देता है कि समय स्थिर नहीं है, वह निरंतर गतिशील है और प्रत्येक क्षण एक नई अवस्था की ओर अग्रसर है। इस प्रकार यह मंदिर केवल पूजा का स्थल नहीं रह जाता, बल्कि समय के दर्शन का एक जीवंत प्रतीक बन जाता है। कोणार्क की संरचना में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि भारतीय स्थापत्य में भौतिक निर्माण और दार्शनिक चिंतन कभी अलग नहीं रहे।

यहाँ पत्थर केवल एक जड़ पदार्थ नहीं, बल्कि अर्थों का वाहक बन जाता है। वह समय, गति और अस्तित्व की भाषा बोलने लगता है, और मनुष्य को यह अनुभव कराता है कि उसका जीवन भी उसी ब्रह्मांडीय लय का हिस्सा है जिसमें निरंतर परिवर्तन ही स्थायित्व का सबसे गहरा रूप है।

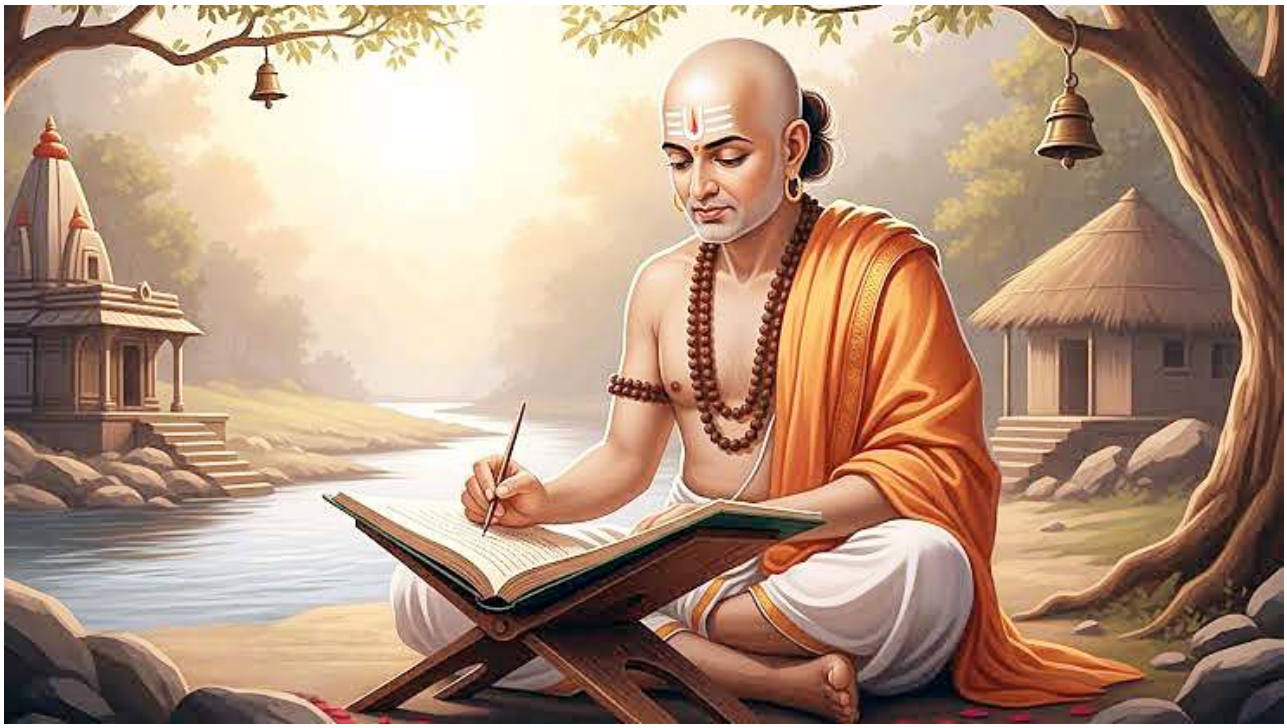
मुग़ल काल भारतीय स्थापत्य इतिहास में एक ऐसा महत्वपूर्ण मोड़ है जहाँ कला ने न केवल नए सौंदर्यबोध को जन्म दिया, बल्कि विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं के बीच एक सजीव संवाद भी स्थापित किया। इस युग में स्थापत्य कला ने जिस रूप में स्वयं को अभिव्यक्त किया, उसमें इस्लामी, फ़ारसी और भारतीय शिल्प परंपराओं का ऐसा समन्वय दिखाई देता है जो किसी एक स्रोत की सीमाओं में बंधा हुआ नहीं लगता। यहाँ भवन निर्माण केवल शक्ति या वैभव का प्रदर्शन नहीं रह जाता, बल्कि वह सौंदर्य, संतुलन और अनुपात की एक ऐसी परिष्कृत भाषा बन जाता है, जिसमें दृश्य सौंदर्य के साथ-साथ भावनात्मक और दार्शनिक गहराई भी समाहित होती है। इस काल की स्थापत्य प्रवृत्ति में भव्यता के साथ-साथ सूक्ष्मता का भी अद्भुत संतुलन देखने को मिलता है। संगमरमर की चिकनी सतहों पर की गई नाज़ुक नक्काशी, जालीदार झरोखे, गुंबदों की सुसंगत वक्रता और उद्यानों की योजनाबद्ध ज्यामिति मिलकर एक ऐसे सौंदर्य संसार का निर्माण करते हैं जिसमें प्रत्येक तत्व एक-दूसरे के साथ समन्वित होकर सम्पूर्णता का अनुभव कराता है। इस प्रकार मुग़ल स्थापत्य केवल संरचना का निर्माण नहीं करता, बल्कि वह एक ऐसे दृश्य अनुभव का सृजन करता है जो मनुष्य की संवेदनाओं को गहराई तक प्रभावित करता है।

ताजमहल इस समूची परंपरा का सर्वोच्च और सर्वाधिक प्रसिद्ध उदाहरण है। इसे केवल एक मकबरे के रूप में देखना इसकी व्यापकता को सीमित करना होगा, क्योंकि यह वास्तव में प्रेम, स्मृति, सौंदर्य और स्थापत्य कौशल का एक ऐसा समन्वित रूप है जिसमें भाव और रूप एक-दूसरे में विलीन हो जाते हैं। इसकी सममित संरचना, केंद्रीय गुंबद, चारों ओर स्थित मीनारें और यमुना तट पर उसकी सटीक स्थिति मिलकर एक ऐसी दृश्यात्मक पूर्णता का निर्माण करते हैं जो दुर्लभ है। ताजमहल में प्रयुक्त सफेद संगमरमर केवल भौतिक सौंदर्य का माध्यम नहीं है, बल्कि वह उस भावनात्मक शुद्धता का भी प्रतीक बन जाता है जिसे यह स्मारक अभिव्यक्त करता है। यही कारण है कि यह केवल एक ऐतिहासिक संरचना नहीं रह जाता, बल्कि विश्वव्यापी सौंदर्यबोध का एक स्थायी प्रतीक बन जाता है। भारतीय स्थापत्य की यह परंपरा केवल मुग़ल काल तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उससे पहले और बाद में भी विभिन्न शैलियों के रूप में विकसित होती रही है। इस विकासक्रम में द्रविड़ और नागर शैलियाँ दो प्रमुख आधारस्तंभों की तरह सामने आती हैं, जिन्होंने भारतीय मंदिर वास्तु को एक विशिष्ट पहचान प्रदान की है। द्रविड़ शैली मुख्यतः दक्षिण भारत में विकसित हुई, जहाँ स्थापत्य की भव्यता, ऊँचे और बहुस्तरीय गोपुरम, विशाल प्रांगण और विस्तृत परिधि इसकी प्रमुख विशेषताएँ बन गईं। यह शैली केवल स्थापत्य संरचना नहीं, बल्कि उस क्षेत्र की सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का भी प्रतिबिंब है, जहाँ मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन के केंद्र के रूप में विकसित हुए।

इसके विपरीत नागर शैली उत्तर भारत में विकसित हुई, जिसकी पहचान ऊर्ध्वगामी संरचना, वक्राकार शिखर और गर्भगृह के ऊपर उठते हुए मंदिर शिखरों से होती है। यह शैली अधिक अंतर्मुखी प्रतीत होती है, जहाँ संरचना की ऊँचाई मानो मनुष्य की चेतना को भौतिक धरातल से ऊपर उठाकर आध्यात्मिक ऊँचाइयों की ओर ले जाने का संकेत देती है। खजुराहो और भुवनेश्वर जैसे मंदिर इस शैली की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं, जहाँ स्थापत्य केवल बाह्य रूप नहीं, बल्कि आंतरिक अनुभव का भी माध्यम बन जाता है। इन दोनों शैलियों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय स्थापत्य में विविधता के भीतर भी एक गहरा अंतर्निहित एकत्व विद्यमान है। भले ही रूप, शैली और क्षेत्र भिन्न हों, परंतु उनके पीछे निहित दृष्टि एक ही है—मनुष्य, प्रकृति और ब्रह्मांड के बीच सामंजस्य स्थापित करना। यही वह तत्व है जो भारतीय कला को केवल ऐतिहासिक या भौगोलिक सीमा में सीमित नहीं रहने देता, बल्कि उसे एक सार्वभौमिक अनुभव में रूपांतरित कर देता है। इस प्रकार भारतीय स्थापत्य कला केवल निर्माण की तकनीक नहीं, बल्कि एक ऐसी जीवंत और सतत विकसित होने वाली परंपरा है जो मानव अनुभव को निरंतर आकार देती रही है। यह हमें यह समझने का अवसर प्रदान करती है कि सृजन केवल पदार्थों का संयोजन नहीं, बल्कि चेतना के विस्तार की प्रक्रिया है, जिसमें मनुष्य अपने भीतर और बाहर दोनों स्तरों पर अर्थ की खोज करता है। इसी कारण भारतीय स्थापत्य आज भी विश्व सांस्कृतिक धरोहर में एक विशिष्ट और अप्रतिम स्थान रखता है, जहाँ प्रत्येक संरचना केवल देखने योग्य वस्तु नहीं, बल्कि एक गहन और स्थायी अनुभूति के रूप में जीवित रहती है।



तुलसीदास: भक्ति, लोकमंगल और जीवन-दर्शन के अमर व्याख्याता



ललित गर्ग

भारत की संत-परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास का स्थान केवल एक महान कवि अथवा रामभक्त के रूप में नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन के लोकनायक और सांस्कृतिक राष्ट्रनायक के रूप में है। श्रावण शुक्ल सप्तमी को मनाई जाने वाली तुलसीदास जयंती हमें उस महापुरुष के स्मरण का अवसर देती है, जिसने रामकथा को राजमहलों और संस्कृत के विद्वत्-वर्ग से निकालकर जन-जन की भाषा, संवेदना और जीवन का हिस्सा बना दिया। तुलसीदास ने भक्ति को केवल पूजा-पद्धति नहीं रहने दिया, उसे चरित्र, मर्यादा, करुणा, सेवा, समन्वय और लोकमंगल का जीवन-मंत्र बना दिया। तुलसीदास का जीवन स्वयं एक अद्भुत आध्यात्मिक यात्रा है। उनका जन्म अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में हुआ। बाल्यकाल में ही माता-पिता का साया छूट गया। जीवन में अभाव और संघर्ष रहे, लेकिन यही संघर्ष आगे चलकर उनकी चेतना के निर्माण की भूमि बने। उनका प्रारंभिक नाम 'रामबोला' बताया जाता है। रामनाम उनके जीवन में केवल एक धार्मिक संबोधन नहीं, बल्कि अस्तित्व का आधार बन गया। आगे चलकर रत्नावली के जीवन-परिवर्तनकारी वचन ने उनके भीतर वैराग्य की ऐसी ज्योति प्रज्वलित की, जिसने सांसारिक आसक्ति को रामभक्ति की विराट धारा में परिवर्तित कर दिया।

तुलसीदास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने भक्ति और जीवन को अलग-अलग खानों में नहीं बांटा। उनके लिए राम मंदिर में प्रतिष्ठित मूर्ति मात्र नहीं हैं। राम सत्य हैं, मर्यादा हैं, नीति हैं, करुणा हैं, शील हैं, शक्ति हैं और लोककल्याण की प्रेरणा हैं। इसलिए तुलसी के राम भारतीय मानस के ऐसे आदर्श बनते हैं, जिनमें ईश्वर और मनुष्य के श्रेष्ठतम गुणों का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। तुलसीदास की अमर कृति 'रामचरितमानस' भारतीय साहित्य और संस्कृति की ऐसी महान उपलब्धि है, जिसकी प्रासंगिकता सदियों के बाद भी कम नहीं हुई। यह केवल रामकथा नहीं है, यह मनुष्य को मनुष्य बनाने वाली जीवन-संहिता है। इसमें परिवार है, समाज है, राजनीति है, राज्यनीति है, कर्तव्य है, त्याग है, मित्रता है, भ्रातृत्व है, करुणा है और सबसे ऊपर धर्म का वह व्यापक स्वरूप है, जो व्यक्ति को स्वयं से ऊपर उठकर लोकमंगल से जोड़ता है। तुलसी ने संस्कृत के गूढ़ आध्यात्मिक ज्ञान को अवधी की सहज और मधुर भाषा में प्रस्तुत करके ज्ञान की सीमाओं को तोड़ा। यही कारण है कि रामचरितमानस केवल पंडितों का ग्रंथ नहीं बना, बल्कि गांव की चौपाल से लेकर नगरों के साहित्यिक मंच तक, मंदिरों से लेकर घरों के आंगन तक जनजीवन का अभिन्न अंग बन गया। तुलसी ने जिस भाषा में लिखा, वह जनता की भाषा थी, जिस कथा को चुना, वह जनमानस की आस्था से जुड़ी थी और जिन मूल्यों को सामने रखा, वे सार्वकालिक थे। इसीलिए तुलसी का साहित्य कालजयी बना।

काशी में उनके ग्रंथ को लेकर मधुसूदन सरस्वती जैसे महान विद्वान ने तुलसी की काव्यप्रतिभा की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि काशी रूपी आनंदवन में तुलसीदास चलते-फिरते तुलसी-वृक्ष हैं और उनकी काव्य-मंजरी पर रामरूपी

भ्रमर मंडरा रहा है। यह टिप्पणी केवल प्रशंसा नहीं, बल्कि तुलसी की आध्यात्मिक और साहित्यिक ऊंचाई की स्वीकृति के रूप में देखी जाती है। तुलसीदास की भक्ति निष्क्रिय पलायन की भक्ति नहीं है। वह मनुष्य को कर्म से विमुख नहीं करती, बल्कि कर्तव्य के प्रति जागरूक करती है। उनके राम वन जाते हैं तो कर्तव्य के कारण। भरत राजसत्ता ठुकराते हैं तो भ्रातृप्रेम और त्याग के कारण। हनुमान सेवा करते हैं तो पूर्ण समर्पण के साथ। सीता संकट में भी धैर्य और आत्मबल का परिचय देती हैं। तुलसी के लिए भक्ति का अर्थ है-अहंकार का विसर्जन और अपने भीतर के श्रेष्ठतम मनुष्य का जागरण। उनका रामभक्त स्वयं को ईश्वर के सामने समर्पित करता है, लेकिन संसार से भागता नहीं। वह समाज, परिवार और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को अधिक गंभीरता से निभाता है। इसीलिए तुलसी की भक्ति में ज्ञान, कर्म और प्रेम का त्रिवेणी-संगम दिखाई देता है।

तुलसीदास को केवल धार्मिक कवि मानना उनके विराट व्यक्तित्व को सीमित करना होगा। उनके साहित्य में तत्कालीन समाज की विसंगतियों, विघटन और नैतिक संकटों की गहरी अनुभूति है। उन्होंने समाज को कोई राजनीतिक घोषणा-पत्र नहीं दिया, बल्कि चरित्र-निर्माण के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का रास्ता दिखाया। उनके रामराज्य की कल्पना में शासन का उद्देश्य सत्ता नहीं, लोककल्याण है। रामराज्य में व्यक्ति भयमुक्त, सम्मानपूर्ण और संतुलित जीवन जीता है। तुलसी के साहित्य का यह पक्ष आज भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि आधुनिक समाज में विकास के साथ-साथ नैतिकता, संवेदना और सामाजिक विश्वास का संकट भी दिखाई देता है। आज परिवार टूट रहे हैं, संबंधों में स्वार्थ बढ़ रहा है, सार्वजनिक जीवन में मर्यादा का क्षरण हो रहा है और व्यक्ति भौतिक उपलब्धियों के बावजूद भीतर से अशांत है। ऐसे समय में तुलसी का साहित्य हमें याद दिलाता है कि सभ्यता की वास्तविक शक्ति उसके चरित्र में होती है, केवल उसकी संपन्नता में नहीं। रामराज्य को केवल किसी प्राचीन शासन-व्यवस्था के रूप में देखना उचित नहीं होगा। यह एक नैतिक और मानवीय व्यवस्था का आदर्श है, जहां शासन लोकहितकारी हो, न्याय निष्पक्ष हो, समाज में परस्पर विश्वास हो और व्यक्ति अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों को भी समझे।

तुलसीदास का कृतित्व अत्यंत व्यापक है। 'रामचरितमानस', 'विनय-पत्रिका', 'कवितावली', 'गीतावली', 'दोहावली', 'कृष्णगीतावली', 'जानकीमंगल', 'पार्वतीमंगल', 'रामलला नहछू', 'वैराग्यसंदीपनी' और 'हनुमान बाहुक' आदि उनकी साहित्यिक प्रतिभा के विविध आयामों को सामने रखते हैं। 'विनय-पत्रिका' में भक्त का आत्मसमर्पण है तो 'कवितावली' में जीवन और समाज के अनुभवों की तीखी संवेदना भी है। 'हनुमान बाहुक' में व्यक्तिगत पीड़ा और आध्यात्मिक आश्रय का अद्भुत संगम दिखाई देता है। इस दृष्टि से तुलसी केवल रामकथा के कवि नहीं, बल्कि मनुष्य की बाहरी और भीतरी दोनों यात्राओं के कवि हैं। तुलसीदास का सबसे महत्वपूर्ण संदेश समन्वय है। उन्होंने ज्ञान और भक्ति, लोक और शास्त्र, आदर्श और यथार्थ, व्यक्ति और समाज तथा अध्यात्म और व्यवहार के बीच पुल बनाया। उनका साहित्य विभाजन नहीं, समरसता की ओर ले जाता है। उनकी दृष्टि में धर्म संकीर्ण पहचान नहीं, बल्कि जीवन को सत्य, करुणा, संयम और मर्यादा से जोड़ने वाली शक्ति है। यही कारण है कि रामचरितमानस का प्रभाव केवल धार्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, उसने भारतीय कला, संगीत, नाटक, लोकपरंपरा, सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक स्मृति को गहराई से प्रभावित किया।



आज तकनीक ने संसार को छोटा कर दिया है, लेकिन मनुष्य का मन कई बार अकेला और अस्थिर होता जा रहा है। सूचना बहुत है, लेकिन विवेक का अभाव दिखाई देता है। संपत्ति बढ़ रही है, लेकिन संतोष घट रहा है। संपर्क बढ़ रहे हैं, लेकिन संबंध कमजोर हो रहे हैं। ऐसे समय में तुलसीदास का संदेश पहले से अधिक प्रासंगिक है। रामचरितमानस हमें सिखाता है कि विकास के साथ मूल्य, शक्ति के साथ विनम्रता, ज्ञान के साथ विवेक और अधिकार के साथ कर्तव्य आवश्यक है। तुलसी का राम हमें भीतर के रावण से लड़ने की प्रेरणा देता है। बाहरी विजय से पहले अंतर्मन की विजय आवश्यक है। तुलसी की यही सबसे बड़ी देन है कि उन्होंने राम को केवल अयोध्या का राजा नहीं रहने दिया, बल्कि भारतीय चेतना के भीतर का आदर्श मनुष्य बना दिया। तुलसीदास का जीवन हमें बताता है कि परिस्थितियां मनुष्य को नहीं बनातीं, बल्कि मनुष्य अपनी चेतना से परिस्थितियों को अर्थ देता है। एक संघर्षशील जीवन से उठकर तुलसी ने ऐसा साहित्य रचा, जिसने भारत की कई पीढ़ियों को संस्कार दिए।

तुलसीदास भारतीय संस्कृति की स्मृति मात्र नहीं, उसकी जीवंत चेतना हैं। उनकी भक्ति हमें भीतर की यात्रा कराती है, उनका साहित्य जीवन का विवेक देता है और उनका राम हमें यह विश्वास दिलाता है कि मनुष्य अपने आचरण से स्वयं को ऊंचा उठा सकता है। तुलसी को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम रामचरितमानस को केवल पढ़ें नहीं, अपने जीवन में चरितार्थ करें। यही तुलसी का जीवन-दर्शन है, यही उनके कृतित्व की सार्थकता है और यही आज के अशांत, विभाजित और मूल्य-संकट से जूझते समाज के लिए उनकी सबसे बड़ी प्रासंगिकता भी है।

भाजपा का सांगठनिक पुनर्गठन का गहरा संदेश: क्या आगामी चुनावों की अंतिम तैयारी है ?



अशोक भाटिया

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन द्वारा 17 अगस्त 2026 को घोषित की गई 65 सदस्यीय नई राष्ट्रीय पदाधिकारियों की सूची केवल एक नियमित प्रशासनिक फेरबदल नहीं है, बल्कि यह देश की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी द्वारा भविष्य के चुनावी समर के लिए बिछाई गई एक रणनीतिक बिसात है। जनवरी 2026 में 45 वर्ष की आयु में पार्टी के सबसे युवा राष्ट्रीय अध्यक्षों में से एक के रूप में कमान संभालने वाले नितिन नबीन ने सात महीनों के गहन मंथन के बाद अपनी इस नई कोर टीम को सार्वजनिक किया है। यह नई सूची स्पष्ट रूप से संकेत देती है कि पार्टी संगठन का यह महा-रीसेट आगामी राज्य विधानसभा चुनावों (विशेषकर 2027 की शुरुआत में होने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव) और लंबी अवधि में 2029 के लोकसभा चुनाव के रोडमैप को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इस व्यापक सांगठनिक पुनर्गठन के केंद्र में अनुभव, युवा ऊर्जा, क्षेत्रीय संतुलन और सामाजिक प्रतिनिधित्व यानी सोशल इंजीनियरिंग के बीच एक बारीक संतुलन बनाने का प्रयास साफ दिखाई देता है।

नितिन नबीन की इस नई टीम का सबसे पहला और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इसमें एक तरफ जहां युवा नेतृत्व को आगे बढ़ाने की कोशिश की गई है, वहीं दूसरी तरफ सांगठनिक अनुभव की निरंतरता को भी अक्षुण्ण रखा गया है। भाजपा की संगठनात्मक परंपरा में यह देखा गया है कि जब भी कोई नया अध्यक्ष आता है, वह अपनी टीम में कुछ मौलिक बदलाव जरूर करता है, लेकिन इस सूची में यह बदलाव बेहद सधे हुए तरीके से किया गया है। इस निरंतरता का सबसे बड़ा प्रतीक बी. एल. संतोष को राष्ट्रीय संगठन महामंत्री के पद पर बरकरार रखना है, जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और पार्टी के बीच समन्वय का मुख्य सेतु होते हैं। संतोष का इस पद पर बने रहना यह दर्शाता है कि पार्टी वैचारिक और सांगठनिक स्तर पर किसी बड़े झटके के बजाय एक सहज संक्रमण चाहती है। उनके साथ ही शिवप्रकाश और सौदान सिंह को राष्ट्रीय सह-संगठन महामंत्री के रूप में बनाए रखना भी इसी निरंतरता की रणनीति का हिस्सा है। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय महासचिवों की सूची में विनोद तावड़े और सुनील बंसल जैसे कद्दावर संगठनात्मक चेहरों को बनाए रखा गया है। सुनील बंसल, जिन्होंने उत्तर प्रदेश में भाजपा के सांगठनिक ढांचे को खड़ा करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी, और विनोद तावड़े, जो लगातार विभिन्न राज्यों में चुनावी प्रबंधन देख रहे हैं, दोनों का बरकरार रहना यह साबित करता है कि भाजपा अपने चुनावी और सांगठनिक 'वार रूम' के मुख्य रणनीतिकारों को बदलने का जोखिम नहीं उठाना चाहती।

इस नई सूची में सबसे अधिक चर्चा पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी और वरिष्ठ नेता राम माधव की सांगठनिक मुख्यधारा में वापसी को लेकर हो रही है, जो भाजपा की उस रणनीति को रेखांकित करता है जिसके तहत उन नेताओं को संगठन में बड़ी भूमिका दी जाती है जो राष्ट्रीय स्तर पर आक्रामक वैचारिक और राजनीतिक विमर्श तय करने की क्षमता रखते हैं। स्मृति ईरानी को पार्टी का राष्ट्रीय महासचिव नियुक्त किया गया है और उन्हें सबसे महत्वपूर्ण राज्य उत्तर प्रदेश का प्रभार सौंपा गया है, जहां 2027 की शुरुआत में बेहद महत्वपूर्ण विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। पिछले कुछ आन्तरिक आकलनों के बाद पार्टी उत्तर प्रदेश में अपनी पकड़ को ढीला नहीं होने देना चाहती और स्मृति ईरानी की आक्रामक छवि को देखते हुए उन्हें यह बड़ी जिम्मेदारी दी गई है ताकि वे संगठन में नई

ऊर्जा का संचार कर सकें। दूसरी ओर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पृष्ठभूमि से आने वाले राम माधव को इस बार राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाया गया है, जिन्हें वैचारिक और रणनीतिक मामलों का विशेषज्ञ माना जाता है, विशेषकर जम्मू-कश्मीर और उत्तर-पूर्व के राज्यों में उनके काम का ट्रैक रिकॉर्ड बेहद मजबूत रहा है। उनकी वापसी यह संकेत देती है कि भाजपा अपने पुराने और परखे हुए रणनीतिकारों को फिर से केंद्रीय भूमिका में ला रही है ताकि वैचारिक मोर्चे और गठबंधन की राजनीति को अधिक मजबूती दी जा सके। इसके अतिरिक्त, केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल को पार्टी का नया राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया है, जो पार्टी के दीर्घकालिक वित्तीय नियोजन और सांगठनिक स्थिरता की दिशा में एक बड़ा कदम है।

नितिन नबीन की 65 सदस्यीय इस नई टीम में 13 राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, 8 राष्ट्रीय महासचिव और 16 राष्ट्रीय सचिव शामिल हैं, जिनमें भौगोलिक और प्रांतीय वितरण का विशेष ध्यान रखा गया है। राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के पद पर बरकरार रखा गया है, जबकि राजस्थान से ही आने वाले सतीश पूनिया को राष्ट्रीय महासचिव और राजेश मंगल को राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष बनाया गया है, जो यह दर्शाता है कि पार्टी आंतरिक गुटबाजी को समाप्त कर सभी धड़ों को एक साथ लेकर चलने का संदेश दे रही है। बिहार से सिद्धार्थ शंभू को राष्ट्रीय सचिव बनाया गया है, जबकि ऋतुराज सिन्हा को विभिन्न पार्टी इकाइयों का सह-समन्वयक नियुक्त किया गया है, क्योंकि बिहार में हाल के वर्षों में बदलते राजनीतिक समीकरणों को देखते हुए सांगठनिक पकड़ मजबूत करना नितिन नबीन के लिए एक व्यक्तिगत और राजनीतिक प्राथमिकता भी है, जो स्वयं बिहार से पांच बार के विधायक हैं। इसी प्रकार, पश्चिम बंगाल से डॉ. मधुचंद्र कार को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और मनोज तिग्गा को राष्ट्रीय सचिव की जिम्मेदारी दी गई है। पंजाब से पूर्व वित्त मंत्री मनप्रीत सिंह बादल को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाया गया है, जो यह स्पष्ट करता है कि भाजपा पंजाब में सिख और गैर-सिख दोनों समुदायों के बीच एक गंभीर स्वीकार्यता बनाने का प्रयास कर रही है, जबकि उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत को भी उपाध्यक्ष मंडल में शामिल कर पहाड़ी राज्यों को प्रतिनिधित्व दिया गया है।

भाजपा की चुनावी सफलता का एक बड़ा आधार उसका सामाजिक समीकरण यानी सोशल इंजीनियरिंग और उसके विभिन्न मोर्चे रहे हैं, जो समाज के अलग-अलग वर्गों तक सीधे पैठ बनाते हैं, और इस बार नितिन नबीन ने सभी प्रमुख सातों मोर्चों के अध्यक्षों की घोषणा करते हुए सामाजिक प्रतिनिधित्व के नियमों का कड़ाई से पालन किया है। युवा मोर्चा की कमान डॉ. हेमंत जोशी को सौंपी गई है, जबकि महिला मोर्चा की अध्यक्षता श्रीमती रूप कुमारी चौधरी को दी गई है जो महिला मतदाताओं को पार्टी से जोड़े रखने का मुख्य दायित्व संभालेंगी। पिछड़े वर्ग के बड़े सामाजिक आधार को पार्टी के साथ बनाए रखने के लिए ओबीसी मोर्चा का अध्यक्ष श्री अमरपाल मौर्य को बनाया गया है, और ग्रामीण तथा कृषि अर्थव्यवस्था से जुड़े मतदाताओं के बीच संवाद स्थापित करने के लिए किसान मोर्चा की जिम्मेदारी श्री बंसीलाल गुर्जर को दी गई है। दलित और आदिवासी समुदायों के बीच सांगठनिक विस्तार को गति देने के लिए अनुसूचित जाति मोर्चा के अध्यक्ष के रूप में श्री शिवेश कुमार राम और अनुसूचित जनजाति मोर्चा के अध्यक्ष के रूप में डॉ. मन्नालाल रावत की नियुक्ति की गई है, जबकि अल्पसंख्यक समुदाय के बीच संवाद कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए अल्पसंख्यक मोर्चा का अध्यक्ष श्री कुंवर बासित अली को बनाया गया है। खासकर ओबीसी और एससी चेहरों को आगे करके पार्टी ने विपक्षी दलों के सामाजिक न्याय के नैरेटिव का मुकाबला करने के लिए अपनी सांगठनिक ढाल तैयार की है। इसके अलावा, पूरी कार्यकारिणी में करीब 12 महिलाओं को सीधे तौर पर पदाधिकारी सूची में स्थान दिया गया है, जिनमें रेखा वर्मा, डॉ. भारती प्रविण पवार और वर्षाबेन नरेंद्रभाई दोषी जैसी नेत्रियों को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जैसी अहम कुर्सियां सौंपी गई हैं, जो इस बात का संकेत है कि पार्टी सांगठनिक स्तर पर भी महिला प्रतिनिधित्व को गहरा कर रही है।

आज के दौर में कोई भी चुनाव केवल जमीन पर नहीं, बल्कि डिजिटल और सोशल मीडिया के स्क्रीन पर भी लड़ा और जीता जाता है, और इस हकीकत को समझते हुए भाजपा ने अपने संचार तंत्र में भी दो महत्वपूर्ण नियुक्तियां की हैं। छत्तीसगढ़ के दीपक म्हस्के को नया राष्ट्रीय सोशल मीडिया संयोजक बनाया गया है, जो यह संकेत देता है कि पार्टी अपने डिजिटल नैरेटिव को एक नया रूप देना चाहती है जो नए दौर के युवाओं की भाषा के अनुकूल हो। वहीं, मुख्यधारा के मीडिया और समाचार चैनलों के साथ बेहतर समन्वय के लिए अनुभवी सांसद अनिल बलूनी को मीडिया संयोजक की जिम्मेदारी दी गई है, जिनका पुराना अनुभव मीडिया प्रबंधन को और अधिक पेशेवर बनाएगा। इसके साथ ही, एक बेहद दिलचस्प नियुक्ति दिल्ली से डॉ. संदीप पाठक की राष्ट्रीय सचिव के रूप में हुई है, जो पूर्व में आम आदमी पार्टी की सांगठनिक जड़ों से जुड़े रहे हैं, और उनका भाजपा के राष्ट्रीय ढांचे में सचिव बनना यह दिखाता है कि पार्टी दूसरी पार्टियों के सांगठनिक रणनीतिकारों की क्षमताओं का उपयोग अपने विस्तार के लिए करने से हिचक नहीं रही है।

संक्षेप में कहा जाए तो, भाजपा अध्यक्ष नितिन नबीन की यह नई राष्ट्रीय टीम स्पष्ट रूप से मिशन मोड में काम करने के लिए बनाई गई है और इस सूची के आने के बाद यह कयास पूरी तरह समाप्त हो जाते हैं कि पार्टी केवल तात्कालिक सांगठनिक आवश्यकताओं से निपट रही है। इसके विपरीत, यह साफ है कि भाजपा ने अपनी सांगठनिक संरचना को इस तरह से कसा है कि वह अगले दो से तीन साल तक होने वाले सभी विधानसभा चुनावों और अंततः 2029 की बड़ी लड़ाई के लिए एक अभेद्य किला तैयार कर सके। स्मृति ईरानी की उत्तर प्रदेश में तैनाती, राम माधव की राष्ट्रीय पटल पर वापसी, सातों मोर्चों का नया नेतृत्व, और सोशल मीडिया विंग का पुनर्गठन—ये सभी कड़ियाँ मिलकर एक बड़े राजनीतिक कैनवास का निर्माण करती हैं। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि यह नई सांगठनिक मशीनरी जमीन पर उतरकर विपक्षी गुटों के नैरेटिव को कितनी कुशलता से काउंटर करती है, लेकिन एक बात तय है कि भाजपा ने अपनी तरफ से चुनावी बिसात बिछा दी है और अपने सेनापतियों को उनकी युद्धभूमि सौंप दी है।



नगर पंचायत कटरा गुलाब सिंह कार्यालय में धूमधाम से मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

प्रतापगढ़। 80वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर नगर पंचायत कटरा गुलाब सिंह कार्यालय परिसर में देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत कार्यक्रम आयोजित किया गया। नगर पंचायत अध्यक्ष अशोक कुमार उर्फ मुन्ना यादव एवं अधिशासी अधिकारी की मौजूदगी में ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर सभी सभासद, नगर पंचायत के अधिकारी-कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में देशप्रेमी मौजूद रहे। ध्वजारोहण के बाद सभी ने एक साथ राष्ट्रगान गाया और तिरंगे को सलामी देकर देश की एकता, अखंडता और संप्रभुता के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया। पूरे परिसर में देशभक्ति का माहौल देखने को मिला। कार्यक्रम के दौरान लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इसके साथ ही संविधान के शिल्पकार भारत रत्न डॉ.भीमराव अंबेडकर के चित्र पर भी माल्यार्पण कर उनके योगदान को याद किया गया। इस अवसर पर नगर पंचायत अध्यक्ष अशोक कुमार उर्फ मुन्ना यादव ने उपस्थित लोगों एवं नगरवासियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि देश की आजादी हमें अनेक वीरों के संघर्ष और बलिदान से मिली है। हमें अपने स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग को सदैव याद रखते हुए देश की एकता, भाईचारे और विकास में अपना योगदान देना चाहिए।



नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि अजय कुमार गुप्ता के नेतृत्व में निकली तिरंगा यात्रा

प्रतापगढ़। नगर पंचायत कटरा मेदनीगंज में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री पिछड़ा वर्ग एवं नि. सांसद श्री संगम लाल गुप्ता जी के नेतृत्व में हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत आयोजित तिरंगा यात्रा में नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि अजय कुमार गुप्ता उर्फ ननके जी सम्मिलित हुए। इस अवसर पर सदर विधायक श्री राजेन्द्र मौर्य, भाजपा नेता श्री नागेश प्रताप सिंह, जिला महामंत्री राजेश सिंह, जिला उपाध्यक्ष श्री राम जी मिश्रा, किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष विजय मिश्रा, सदर मंडल अध्यक्ष गजराज सिंह, मनोज कुमार अग्रहरी नामित सभासद, अमित सोनी नामित सभासद, पवन कुमार सभासद, सुनील मोदनवाल बूथ अध्यक्ष,विशाल प्रजापति बूथ अध्यक्ष, आनन्द मोदनवाल बूथ अध्यक्ष, दिव्यांशु कसेरा बूथ अध्यक्ष, शिवम कसेरा बूथ अध्यक्ष सहित भारतीय जनता पार्टी के जिला एवं मंडल के पदाधिकारी, समर्पित कार्यकर्ता एवं बड़ी संख्या में सम्मानित आमजन उपस्थित रहे।



अध्यक्ष प्रतिनिधि सचिन सिंह शोलू के नेतृत्व में निकली भव्य तिरंगा यात्रा में गूंजे देश भक्ति नारे



प्रतापगढ़। नगर पंचायत गड़वारा की अध्यक्ष सीमा सिंह के प्रतिनिधि पुत्र सचिन सिंह शोलू के अगुवाई में मां चण्डिका देवी धाम से भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई। सैकड़ों बाइक पर सवार होकर युवा कार्यकर्ताओं का जोश अद्भुत रहा। डीजे की धुनों पर बाइक पर राष्ट्र गीत गाते, देश भक्ति नारे लगाते एवं थिरकते हुए नगर पंचायत गड़वारा कार्यालय पर पहुंचे। हाथों में तिरंगा लेकर बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं, युवाओं एवं आमजन ने भारत माता के जयकारे लगाए। पूरे मार्ग पर राष्ट्रभक्ति का उत्साह और तिरंगे की शान दिखाई दी। तिरंगा यात्रा के संयोजक अध्यक्ष प्रतिनिधि सचिन सिंह शोलू ने कहा कि तिरंगा हमारे देश की आन, बान और शान का प्रतीक है। ऐसे आयोजनों के माध्यम से युवा पीढ़ी में राष्ट्रभक्ति, देश के प्रति समर्पण और अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूकता का भाव मजबूत होता है। उन्होंने कहा कि भारत की एकता और अखंडता को मजबूत बनाए रखना हम सभी की जिम्मेदारी है। आगे उन्होंने कहा कि भारत माता के जयकारे एवं युवाओं का जोश देखकर हर कोई यह कहने पर मजबूर हो गया कि आने वाले समय में देश का भविष्य और उज्ज्वल होगा। वही देश की सुरक्षा व्यवस्था को युवा और अधिक मजबूती प्रदान करेंगे। नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि सचिन सिंह शोलू द्वारा भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। माँ चण्डिका देवी धाम से प्रारंभ होकर यात्रा गौरवारी बाजार होते हुए नगर पंचायत सीमा में प्रवेश करके गड़वारा बाजार में स्थित शिवालय पर समापन हुआ। उत्साह और हर्ष के माहौल में इस यात्रा में शामिल हर कोई राष्ट्र भक्ति के रंग में रंगा नजर आया। इस अवसर पर सभी सभासद इरफान, इबरार अहमद, सुधीर वर्मा, शिवम् पान्डेय, बृजेश सिंह, अबिनाश सरोज, देवव्रत सिंह, रोशन सिंह, गुड्डू विश्वकर्मा, अमन सिंह, अतुल सिंह, फोटो शुक्ल, सन्तोष सिंह सहित बड़ी संख्या में युवाओं की उपस्थिति रही।



500 साल से बंद थी राजा की कब्र, खुलते ही एक-एक कर 15 वैज्ञानिकों की हुई मौत; अंदर छिपा था खतरनाक 'कातिल'

साल 1973 में पोलैंड के नेशनल मीडिया में एक खबर ने जबरदस्त हलचल मचा दी थी. रिसर्चर्स और पुरातत्वविदों की एक टीम को पोलैंड के 15वें दशक के महान राजा कैसिमिर चतुर्थ जगियेलोन के मकबरे को खोलने की विशेष अनुमति मिली थी. इसी खबर ने पूरे देश में हलचल मचा दी थी. राजा कैसिमिर का निधन 1492 में हुआ था और करीब 500 साल बाद उनके अंतिम विश्राम स्थल को रिसर्च के लिए खोला जा रहा था.

एक-एक कर होने लगीं मौतें

राजा का मकबरा खुलने के कुछ ही दिनों के भीरत, अंदर कदम रखने वाले 12 रिसर्चर्स में से 4 की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई. वहीं अगल कुछ ही सप्ताह में मरने वालों की संख्या 10 तक पहुंच गई. समय बीता और करीब कुछ सालों के भीतर मकबरे के अंदर जाने वाले या लैब में कंकाल पर काम करने वाले कुल 15 वैज्ञानिकों की मौत हो चुकी थी.

शुरुआत में इसे मिस्र के ममी के श्राप जैसी किसी शक्ति से जोड़कर देखा जाने लगा. ठीक वैसा ही, जैसा 1922 में राजा तूतनखामेन की कब्र खोलने वाले लॉर्ड कार्नारवॉन की अचानक हुई मौत के समय माना गया था.

श्राप था या कुछ और वजह?

15 लोगों की जान जाने के बाद हर कोई हैरान था. लोगों के मन में यह सवाल आ रहा था कि आखिर 15 लोगों की मौत के पीछे श्राप था या कुछ और वजह. इसी सवाल का जवाब जानने के लिए वैज्ञानिकों ने तहकीकात की, फिर जो सच सामने आया, वो चौंकाने वाला था. कब्र में मौत की वजह कोई श्राप नहीं, बल्कि सदियों से बंद हवा में पनप रहा बेहद खतरनाक और जहरीला फंगस था.

जब 1492 में राजा कैसिमिर का निधन हुआ था, तब भीषण गर्मी पड़ रही थी. उनका शरीर तेजी से सड़ने लगा था, जिसे आनन-फानन में साधारण लकड़ी के ताबूत में रखकर बंद कर दिया गया. 500 साल तक बिना हवा और नमी में बंद रहने के कारण ताबूत तो सड़ गया, लेकिन वहां फंगस के लिए एकदम अनुकूल माहौल बन गया.

1973 में जब कब्र खोली गई, तो हवा में फफूंद का बहुत ज्यादा जमावड़ा था. टेस्ट में पाया गया कि कब्र के अंदर Aspergillus, Penicillium rubrum और Penicillium rugulosum जैसे घातक फंगस बहुत ज्यादा मात्रा में मौजूद थे.

सांस के जरिए फेफड़ों में फैला 'साइलेंट किलर'

नार्मल स्थितियों में ये फंगस सिर्फ एलर्जी या हल्का बुखार देते हैं. लेकिन बंद जगह पर जब इन्हें सांस के जरिए बहुत ज्यादा मात्रा में सूंघ लिया जाए, तो ये जानलेवा बन जाते हैं. कमजोर इम्युनिटी वाले लोगों के फेफड़ों में जाकर ये फंगस अपनी कॉलोनी बना लेते हैं, जिससे इन्फेक्शन इतना बढ़ जाता है कि इंसान की कुछ ही दिनों में या धीरे-धीरे सालों में मौत हो जाती है.

साल 2015 में जर्नल ऑफ द एयर एंड वेस्ट मैनेजमेंट एसोसिएशन में छपे एक रिसर्च ने भी इसकी पुष्टि की कि ऐसी ऐतिहासिक प्राचीन कब्रों के अंदर फंगस का स्तर इंसान के लिए सुरक्षित सीमा से कहीं ज्यादा होता है.

इसी वजह से आज पुरातत्वविद किसी भी पुरानी कब्र या मकबरे में प्रवेश करने से पहले विशेष मास्क और सुरक्षा उपकरणों का इस्तेमाल करते हैं.

सांपों के भी थे पैर! जानिए 10 करोड़ साल पहले अचानक ऐसा क्या हुआ जो गायब हो गए अंग

कल्पना कीजिए कि आपके सामने एक सांप 4 पैरों पर चलकर आ रहा है. शायद यह किसी डरावनी फिल्म का सीन लगे. लेकिन सच यह है कि आज से 10 से 17 करोड़ साल पहले धरती पर घूमते सांपों के पास असली पैर थे. वे छिपकली की तरह चलते थे और शिकार करते थे. तो फिर ऐसा क्या हुआ कि उनके पैर गायब हो गए? क्या प्रकृति ने कोई जादू किया या डीएनए का कोई खेल था? आइए जानते हैं इस 100 मिलियन साल पुराने रहस्य की पूरी कहानी.

100 मिलियन साल पुराना जीवाश्म और बड़ा खुलासा

वैज्ञानिकों को अर्जेंटीना के रेगिस्तान में एक बेहद अनोखा जीवाश्म मिला. इसका नाम Najash rionegrina रखा गया. यह लगभग 9.5 से 10 करोड़ साल पुराना सांप का जीवाश्म था. सबसे हैरान करने वाली बात यह थी कि इस सांप के पिछले पैर साफ-साफ शरीर से बाहर निकले हुए थे. यह कोई समुद्री जीव नहीं था बल्कि जमीन और रेगिस्तान में रहने वाला शिकारी सांप था. इसके चेहरे की हड्डियां बताती हैं कि यह कीड़ा नहीं बल्कि बड़े शिकार निगलने वाला खतरनाक शिकारी था.

रातोंरात नहीं गायब हुए पैर

सांपों ने अपने पैर अचानक एक दिन में नहीं गंवाए. वैज्ञानिकों के अनुसार यह बदलाव धीरे-धीरे हुआ. सांपों ने सबसे पहले अपने आगे के पैर करीब 17 करोड़ साल पहले गंवाए. इसके बाद भी वे करोड़ों सालों तक पिछले पैरों के सहारे चलते रहे. करीब 10 करोड़ साल पहले जाकर उनके पिछले पैर भी पूरी तरह गायब हुए. यह बदलाव इतना धीमा था कि इसमें डायनासोर के खत्म होने से भी ज्यादा समय लगा.

डीएनए का वह जीन जिसने बंद कर दिया पैर बनाना



वैज्ञानिकों ने जब सांपों के डीएनए की जांच की तो उन्हें Sonic hedgehog नाम का एक जीन मिला. यह जीन जानवरों में पैर और दिमाग बनाने का काम करता है. सांपों में इस जीन को चालू करने वाला स्विच जिसे ZRS एन्हांसर कहते हैं म्यूटेशन के कारण बंद हो गया था. जब वैज्ञानिकों ने लैब में चूहे के भ्रूण में सांप के इस टूटे हुए स्विच को ठीक करके लगाया तो चूहे के पैर सामान्य रुप से उग आए. इसका मतलब है कि पैर बनाने का कोड आज भी सांपों के डीएनए में छिपा हुआ है.

अजगर के शरीर में आज भी छिपे हैं 'पैर'

क्या आप जानते हैं कि आज के अजगर और बोआ (Boa) सांपों में पूरी तरह पैर खत्म नहीं हुए हैं. अगर आप किसी अजगर के पिछले हिस्से को ध्यान से देखें तो वहां छोटी-सी हड्डियां या कांटे जैसी संरचना दिखती है. ये और कुछ नहीं बल्कि उनके पुराने पैरों के बचे हुए हिस्से हैं. भ्रूण के दौरान अजगर के पैर बनना शुरु होते हैं लेकिन बाद में वे रुक जाते हैं. वहीं कोबरा और वाइपर जैसे सांपों में यह जेनेटिक बदलाव बहुत आगे तक चला गया और उनके पैर पूरी तरह मिट गए.

आखिर पैर गंवाने की जरुरत क्यों पड़ी?

सबसे बड़ा सवाल यह है कि सांपों ने पैर क्यों गंवाए. सीटी-स्कैन और शोध से पता चलता है कि प्राचीन सांपों ने जमीन के नीचे बिल बनाकर रहना शुरु कर दिया था. मिट्टी और पत्थरों के बीच खुदाई करते समय पैर रुकावट बनने लगे थे. इसलिए लंबे और बिना पैर वाले शरीर से बिलों में रेंगना ज्यादा आसान हो गया. प्रकृति ने उन्हें रेंगने में माहिर बना दिया और धीरे-धीरे पैरों की जरुरत ही खत्म हो गई.

चेहरा योगी का... रणनीति तावड़े की... जीत वाला फार्मूला बिहार का...

तो ऐसे यूपी चुनाव 2027 में बीजेपी लगाएगी हैट्रिक!

उत्तर प्रदेश में अगले साल यानी 2027 में विधानसभा चुनाव होने हैं. इस चुनाव लेकर प्रदेश में अभी से सियासत गर्मा गई है. भारतीय जानता पार्टी (BJP) मिशन 2027 को लेकर जी-जान से जुट गई है. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सामने लगातार तीसरी बार बीजेपी की सरकार बनाने की चुनौती है. बीजेपी किसी भी हाल में जीत की हैट्रिक लगाना चाह रही है. इसी कड़ी में बीजेपी ने राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े को उत्तर प्रदेश का प्रभारी नियुक्त कर उन्हें बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है.

आपको मालूम हो कि इससे पहले भी विनोद तावड़े बीजेपी और एनडीए के लिए कई महत्वपूर्ण चुनावी जिम्मेदारियां संभाल चुके हैं. वह बिहार के प्रभारी रह चुके हैं. तावड़े के कार्यकाल में बीजेपी ने गठबंधन के साथ चुनावी रणनीति को मजबूत किया था. तावड़े के संगठनात्मक मार्गदर्शन में बिहार विधानसभा 2025 में एनडीए गठबंधन ने बड़ी जीत दर्ज की थी. ऐसे में विनोद तावड़े को यूपी की जिम्मेदारी सौंपे जाने को महत्वपूर्ण माना जा रहा है. विनोद तावड़े को उत्तर प्रदेश का प्रभारी नियुक्त करने को भाजपा के बिहार फॉर्मूले से जोड़कर देखा जा रहा है. अब सबकी नजरें सीएम योगी के मजबूत चेहरे के साथ तावड़े की रणनीति पर होगी. अब देखना है बीजेपी मिशन-2027 को कैसे फतह करती है?

...तो पहले से यूपी में सक्रिय हैं तावड़े

आपको मालूम हो कि तावड़े की उत्तर प्रदेश में सक्रियता नई नहीं है. उन्होंने अप्रैल 2026 में सीएम योगी से मुलाकात की थी. उस समय प्रदेश बीजेपी की टीम, निगम-आयोगों में नियुक्तियों और संभावित मंत्रिमंडल विस्तार जैसे मुद्दों पर चर्चा की खबरें सामने आई थीं. इसका मतलब है कि चुनाव प्रभारी बनने से पहले ही विनोद तावड़े यूपी बीजेपी के सत्ता और संगठन से जुड़े अहम मामलों में सक्रिय थे.

तावड़े के सामने क्या होगी बड़ी चुनौती

भारतीय जानता पार्टी यह जानती है कि यूपी में चुनाव सिर्फ बड़े नेताओं की रैलियों से नहीं जीता जा सकता है. इस प्रदेश में चुनाव जीतने के लिए बूथ लेवल का संगठन, टिकट चयन, जातीय और क्षेत्रीय समीकरण, सहयोगी दलों के साथ तालमेल और नाराज नेताओं को साधना बड़ी चुनौती होती है. ऐसे में विनोद तावड़े को यूपी का प्रभारी बनाकर संगठन और सामाजिक समीकरणों को साधने की जिम्मेदारी दी गई है. तावड़े के सामने एक तरफ पुराने और मजबूत संगठनात्मक चेहरों को बनाए रखने की चुनौती होगी तो दूसरी तरफ उन सीटों पर नए सामाजिक समीकरण बनाने की जरूरत होगी, जहां बीजेपी को नुकसान हुआ था. विनोद तावड़े के सामने टिकट के बंटवारे और यूपी बीजेपी के कोर ग्रुप के साथ बेहतर तालमेल सबसे बड़ी चुनौती हो सकती है. यूपी विधानसभा चुनाव 2027 में तावड़े के सामने अखिलेश यादव की PDA राजनीति भी बड़ी चुनौती होगी. यूपी में एक-एक विधानसभा सीट सही विश्लेषण महत्वपूर्ण होगा.

योगी के साथ तावड़े की जोड़ी महत्वपूर्ण क्यों

इसके साथ ही यूपी विधानसभा चुनाव 2027 में बीजेपी के पास सबसे बड़ा राजनीतिक चेहरा योगी आदित्यनाथ हैं. आपको मालूम हो कि बीजेपी अध्यक्ष नितिन नवीन पहले ही यह कह चुके हैं कि यूपी में विधानसभा चुनाव सीएम योगी आदित्यनाथ के चेहरे पर ही लड़ा जाएगा. सीएम योगी के साथ तावड़े की जोड़ी महत्वपूर्ण मानी जा रही है. पिछले सालों में योगी सरकार ने विकास के कई कार्य किए हैं. योगी सरकार ने कानून-व्यवस्था का काफी सुदृढ़ किया है. ऐसे में सीएम योगी की भूमिका



सरकार के कामकाज और चुनावी नैरेटिव को जनता तक पहुंचाने की होगी. उधर, तावड़े की चुनौती उस नैरेटिव को संगठन और बूथ तक पहुंचाने की होगी.

बिहार वाला फॉर्मूला यूपी में

यूपी में विनोद तावड़े जिम्मेदारी को भारतीय जनता पार्टी के उस रणनीतिक प्लान का हिस्सा माना जा रहा है, जिसमें बिहार की तरह संगठन, सहयोगी दलों और सामाजिक समीकरणों को साधने पर जोर दिया जा सकता है. आपको मालूम हो कि बिहार में भाजपा के साथ पांच पार्टियों का गठबंधन था. इन पार्टियों की अपनी सामाजिक और जातीय पकड़ है. यूपी में भी भारतीय जनता पार्टी साथ 5 दल गठबंधन का हिस्सा हैं. यूपी में बीजेपी के साथ जयंत चौधरी के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय लोकदल, अनुप्रिया पटेल के नेतृत्व वाला अपना दल (सोशलिस्ट/सोनेलाल), ओमप्रकाश राजभर के नेतृत्व वाली सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी, संजय निषाद के नेतृत्व वाली निषाद पार्टी शामिल है.

ऐसे में सहयोगी दलों के जरिए अलग-अलग सामाजिक समीकरण साधने की रणनीति अहम हो सकती है. आपको मालूम हो कि बिहार चुनाव से पहले महिला मतदाताओं को आर्थिक लाभ देने वाली योजनाओं और सीधे खाते में राशि पहुंचाने पर जोर दिया गया था. यूपी में भी महिलाओं को आर्थिक सहायता देने की संभावित योजना को इसी रणनीति से जोड़कर देखा जा रहा है. आपको मालूम हो कि यूपी में 403 विधानसभा सीटें हैं. यहां क्षेत्रीय राजनीति काफी महत्वपूर्ण रोल निभाती है. इसके अलावा पश्चिमी यूपी, पूर्वांचल, बुंदेलखंड और अवध तक चुनावी मुद्दे अलग-अलग हैं. ऐसे में विनोद तावड़े को बिहार का फॉर्मूला हूबहू लागू करने के बजाय उत्तर प्रदेश के स्थानीय समीकरणों के हिसाब से रणनीति बनानी होगी.

MBBS के बाद कैसे बनते हैं सर्जन? MS, MCh या DNB... कौन-सी डिग्री है जरूरी, यहां समझिए पूरा गणित



अगर आपका सपना ऑपरेशन थिएटर में मरीजों का इलाज करना और एक सफल सर्जन बनना है, तो सिर्फ डॉक्टर बनना ही पर्याप्त नहीं होता. भारत में सर्जन बनने के लिए कई चरणों की मेडिकल शिक्षा, प्रवेश परीक्षाएं और क्लीनिकल ट्रेनिंग पूरी करनी पड़ती है. यही वजह है कि यह मेडिकल क्षेत्र के सबसे चुनौतीपूर्ण और सम्मानित करियर विकल्पों में गिना जाता है. सही योजना और लगातार मेहनत के साथ छात्र 12वीं के बाद इस करियर की शुरुआत कर सकते हैं. मेडिकल विशेषज्ञों के अनुसार, सर्जन बनने के लिए मजबूत शैक्षणिक आधार, व्यावहारिक प्रशिक्षण और विशेष सर्जिकल कौशल विकसित करना बेहद जरूरी होता है.

सर्जन बनने की दिशा में पहला कदम 12वीं कक्षा में फिजिक्स, केमिस्ट्री और बायोलॉजी (PCB) विषयों के साथ पढ़ाई पूरी करना है. इसके बाद उम्मीदवारों को NEET UG परीक्षा पास करनी होती है. इसी राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा के आधार पर सरकारी और निजी मेडिकल कॉलेजों में MBBS की सीटें आवंटित की जाती हैं. NEET में बेहतर रैंक मिलने पर प्रतिष्ठित मेडिकल कॉलेज में दाखिले की संभावना बढ़ जाती है. इसलिए 12वीं के बाद सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य NEET UG में अच्छा प्रदर्शन करना होता है.

MBBS की पढ़ाई क्यों जरूरी है?

MBBS यानी Bachelor of Medicine and Bachelor of Surgery भारत में डॉक्टर बनने की अनिवार्य डिग्री है. यह कोर्स कुल 5.5 वर्ष का होता है, जिसमें साढ़े चार वर्ष की अकादमिक पढ़ाई और एक वर्ष की अनिवार्य इंटर्नशिप शामिल होती है. इस दौरान छात्रों को एनाटॉमी, फिजियोलॉजी, पैथोलॉजी, फार्माकोलॉजी, माइक्रोबायोलॉजी और विभिन्न क्लीनिकल विषयों की गहन शिक्षा दी जाती है. यही प्रशिक्षण भविष्य में सर्जरी और अन्य चिकित्सा क्षेत्रों की मजबूत नींव तैयार करता है.

MS, DNB और MCh में क्या अंतर है?

MBBS पूरा करने के बाद सर्जन बनने के लिए NEET PG परीक्षा उत्तीर्ण करनी होती है. इसके बाद उम्मीदवार MS (Master of Surgery) या DNB (Diplomate of National Board) जैसे पोस्टग्रेजुएट सर्जिकल कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं. दोनों डिग्रियां भारत में मान्यता प्राप्त हैं और सामान्य सर्जन बनने का रास्ता खोलती हैं. इन कोर्सों की अवधि सामान्यतः 3 वर्ष होती है. यदि कोई डॉक्टर किसी विशेष सर्जिकल शाखा, जैसे न्यूरोसर्जरी, कार्डियक सर्जरी, यूरोलॉजी या प्लास्टिक सर्जरी में विशेषज्ञता हासिल करना चाहता है, तो वह आगे MCh (Master of Chirurgiae) सुपर-स्पेशलिटी कोर्स कर सकता है, जिसकी अवधि आमतौर पर 3 वर्ष होती है.

सर्जन बनने में कुल कितना समय लगता है?

यदि कोई छात्र 12वीं के बाद लगातार बिना किसी शैक्षणिक अंतराल के आगे बढ़ता है, तो जनरल सर्जन बनने में लगभग 8.5 वर्ष का समय लगता है. इसमें MBBS (5.5 वर्ष) और MS या DNB (3 वर्ष) शामिल हैं. वहीं यदि कोई सुपर-स्पेशलिस्ट सर्जन बनना चाहता है और MCh भी करता है, तो कुल अवधि लगभग 11.5 वर्ष या उससे अधिक हो सकती है. इस दौरान उम्मीदवारों को सैद्धांतिक पढ़ाई के साथ-साथ ऑपरेशन थिएटर में व्यावहारिक प्रशिक्षण और मरीजों के उपचार का व्यापक अनुभव भी प्राप्त होता है.

करियर और अवसर क्या हैं?

MS, DNB या MCh पूरी करने के बाद डॉक्टर सरकारी अस्पतालों, निजी अस्पतालों, मेडिकल कॉलेजों, सुपर स्पेशलिटी संस्थानों या अपने निजी क्लीनिक में सर्जन के रूप में कार्य कर सकते हैं. अनुभव बढ़ने के साथ आय और करियर के अवसर भी तेजी से बढ़ते हैं. मेडिकल विशेषज्ञों का मानना है कि सर्जरी केवल एक डिग्री नहीं, बल्कि निरंतर सीखने, तकनीकी दक्षता और मरीजों के प्रति जिम्मेदारी का पेशा है. यदि आपके भीतर धैर्य, समर्पण और कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता है, तो सर्जन का करियर आपके लिए एक बेहतरीन विकल्प साबित हो सकता है.

कजिन मैरिज के साइड इफेक्ट, बॉडी से गायब हो रहा खास जीन; PAK के डाटा ने वैज्ञानिकों को डराया!

दुनियाभर के कई देशों में कजिन मैरिज काफी पॉपुलर है. खासकर मुस्लिम देशों में चचेरे भाई-बहनों के बीच शादी हो जाती है. वर्ल्ड पॉपुलेशन रिव्यू के मुताबिक पाकिस्तान में सबसे ज्यादा कजिन मैरिज होती है. सामाजिक लेवल पर इस शादी को सही माना जाता है लेकिन वैज्ञानिक दृष्टि से इस तरह की शादी सही नहीं होती है. कजिन मैरिज की वजह से जेनेटिक डिसॉर्डर और कई जानलेवा बीमारी का रिस्क बढ़ जाता है.

कजिन मैरिज को लेकर साइंटिफिक रिसर्च कई बार इस बात की पुष्टि करती आ रही है कि कजिन मैरिज करने से आने वाली पीढ़ियों में हेल्थ रिस्क बढ़ सकता है. चचेरे-ममेरे भाई-बहनों में शादी होने से आने वाले बच्चों में जेनेटिक डिसॉर्डर होना का रिस्क बढ़ सकता है.

पाकिस्तान को लेकर आई नई स्टडी

नई स्टडी के अनुसार पाकिस्तान में ह्यूमन नॉकआउट है. रिसर्च के मुताबिक लगभग 34, 000 हजार लोगों में ह्यूमन नॉकआउट देखने को मिला. ह्यूमन नॉकआउट एक ऐसी कंडीशन में जिसमें इंसान के कम से कम एक जीन ने काम करना बंद कर दिया होता है या फिर वह जीन गायब हो गया होता है.

दरअसल हर इंसान में हर जीन की दो कॉपी होती है. एक जीन माता से दूसरा पिता से मिलता है. जब कजिन मैरिज होती है तो बच्चों में माता-पिता के दोनों में एक जैसा म्यूटेशन मिलता है. जिससे उनके शरीर में जीन पूरी तरह से गायब हो जाता है. रिसर्च के वैज्ञानिक पता कर सकते हैं कि जीन गायब होने से इंसान के शरीर पर क्या असर पड़ रहा है. इसका सेहत पर क्या-क्या साइड इफेक्ट्स दिख रहे हैं. इससे इलाज और दवाई बनाने में मदद मिल सकती है.

रिसर्च में हुआ खुलासा

नेचर में छपी स्टडी के अनुसार दक्षिण एशियाई देशों में जीनोमिक अध्ययन में 1,73,303 जीनोम का आकलन किया गया. इस शोध से इंसान के जीन, आनुवंशिकी विकास को अच्छे से समझ और इस इलाज के लिए दवाई का विकास कर सके. रिसर्च में पाया गया है कि पाकिस्तान जीनोम रिसोर्स में शामिल हर पांच में एक इंसान में कम से कम एक जीन गायब है. स्टडी के मुताबिक 6500 जीन स्विच ऑफ मिले.इस स्टडी में देखा गया है कि इंसान के शरीर से जीन गायब होने पर उनकी सेहत पर क्या असर पड़ सकता है.

इससे पहले जीन की स्टडी चूहों पर की जाती थी. रिसर्च में देखा गया है कि चूहों और इंसान के जीन अलग-अलग तरीके से काम करते हैं. इस वजहसे चूहों पर काम करने वाली दवाई इंसान पर काम नहीं करीत हैं. जिस वजह से लाखों डॉलर, समय और मेहनत बर्बाद हो जाती है. लेकिन स्टडी और रिसर्च से दवाई की खोज में बड़ा क्लू मिल सकता है.



आपको भी है रातभर फोन चलाने की आदत? मौत के मुंह में जा सकती है अच्छी-खासी सेहत, शरीर को ऐसे भारी पड़ सकता है कम नींद लेना



ये नींद क्या है ? क्यों आती है नींद ? रात को जागने से लंबी बीमारियों से कैसे मौत के मुंह में जाता है इंसान ? जानिए नींद का वैज्ञानिक रहस्य. आजकल विज्ञान , कम्प्यूटर और नेट का जमाना है और पूरी दुनियां इंटरनेट से जुड़ गयी है. इसलिए मनुष्य रात और दिन काम करने लगा है. कॉल सेंटर और रात की शिफ्ट में काम करने वाले लोगों का बुरा हाल है. जवान बच्चे बहुत जल्दी नपुंसक और बूढ़े हो रहे हैं. दिनरात काम करने के कारण मनुष्य डिप्रेशन की भयंकर बीमारी और मानसिक रोगों का शिकार होने लगा है. बीमारियां कुकुरमुत्ते की तरह बढ़ रही हैं. रातभर जागना और दिन में सोना प्रकृति के नियमों के विरुद्ध है. जब-जब भी हम प्रकृति के नियमों का उल्लंघन करेंगे तब-तब तबाही के कगार पर आ जाएंगे.

रातभर जागने के नुकसान

आखिर क्यों रात को जागने से शुगर , उच्च रक्तचाप, किडनी फैलोर, कम उम्र में हार्ट अटैक , डिप्रेशन , सिरदर्द , बुद्धि का कमजोर होना , याद न रहना , और बुढ़ापा तथा हिजडापन जैसी बीमारियां आ रही हैं. नींद शरीर का एक ऑटोमैटिक सेंसर है, जो अपान प्राण के द्वारा संचालित है. पांचों प्राणों का संबंध शरीर की ऊर्जा शक्ति के साथ होता है. नींद का संबंध शरीर की ऊर्जा शक्ति के साथ साथ 72,72 ,10,202 नस-नाड़ियों के साथ होता है. जब शरीर में ऊर्जा की कमी होनी शुरु हो जाती है तो अपान प्राण नींद को संकेत कर देता है कि शरीर से काम लेना बंद कर दें और ऊर्जा की खपत को बंद कर दें क्योंकि शरीर थक चुका है. अन्यथा शरीर के अंगों पर दुष्प्रभाव पड़ेगा. प्राण सूर्य की किरणों से संचालित होते हैं. प्राण दिन में सूर्य से ऊर्जा एकत्रित कर लेते हैं.

क्यों होती हैं बीमारियां?

प्राण शरीर को इन्वर्टर की तरह चार्ज कर देते हैं. रात को प्राणों को ऊर्जा की सप्लाई नहीं हो पाती है, फिर भी रात भर जागने से शरीर तो काम करता है और ऊर्जा की खपत भी करता है. ऐसी स्थिति में समान प्राण शरीर को ऊर्जा की पूर्ति के लिए शरीर के चलायमान अंगो से (लीवर, किडनी, फेफड़े, आंते, हृदय, मस्तिष्क , पेनक्रिया तथा पेट) से ऊर्जा लेना शुरु कर देता है. शरीर में ऊर्जा की सप्लाई का काम समान प्राण के पास होता है. जब पूरी रात जागते हैं तो 1 हफ्ते में शरीर के ये अंग बहुत कमजोर हो जाते हैं और इन अंगो की ऊर्जा शक्ति समाप्त हो जाती है, जिसके कारण उपर लिखी हुई बीमारियां पैदा हो जाती हैं. जब ये शरीर के अंग कमजोर हो जाते हैं तो फिर समान प्राण शरीर के बाहरी हिस्से से ऊर्जा लेना शुरु कर देता है, जिसके कारण मनुष्य पहले अन्दर के अंगों से कमजोर होता है उसके बाद शरीर के बाहरी हिस्से से अंगो (हिप्स , जांघे , हाथ , गाल , गर्दन) से कमजोर होकर दुबला होना शुरु हो जाता है.

रात को जागना क्यों हैं घातक?

ज्यादा काम करने वाले लोगों को ज्यादा नींद आती है, क्योंकि शरीर में ऊर्जा की खपत ज्यादा हो जाती है और शरीर थक जाता है. शरीर में दुबारा ऊर्जा की आपूर्ति के लिए नींद शरीर को निष्क्रिय अवस्था में कर देती है या हम यह कह सकते हैं कि (Non Working Mode) पर डाल देती है, जिसके कारण शरीर अचेतन अवस्था में चला जाता है और सो जाता है . इसलिए नींद शरीर का एक ऑटोमैटिक ऊर्जा मापक यंत्र है, जो आपको समय-समय पर संकेत देता है कि अब आप सो जाओ अन्यथा अंग बीमार हो जाएंगे. अगर आप नींद की नहीं मानोगे तो वह आपके शरीर के अंगो को नुकसान (damage) कर देगी, इसलिए रात को जागने वाले और दिन को सोने वाले लोग की उम्र आधी रह जाती है और लंबी बीमारी के कारण अचानक जल्दी म्रत्यु को प्राप्त हो जाते हैं. इसलिए स्वस्थ रहने के लिए मनुष्य को रात को पूरी नींद करनी चाहिए. गहरी नींद लेने का समय 10 से 4 बजे तक ही होता है.

न जिम, न कोई जादुई दवा... फिर भी 100 साल से ज्यादा जीते हैं लोग; जानिए दुनिया की वो 5 जगहें, जहां के लोग होते 'शतायु'

हर किसी की चाहत लंबी उम्र पाने की होती है. हर कोई यह चाहता है कि बुढ़ापा भी जवानी की तरह स्वस्थ और शानदार गुजरे और 100 की उम्र में भी निरोग रहें. मगर, ऐसा हो नहीं पाता है. अक्सर वक्त बीतने के साथ ज्यादा उम्र होने पर बीमारियां घेर लेती हैं या फिर इंसान अशक्त हो जाता है. लेकिन इसी दुनिया में ऐसे कई लोग हैं जो आज भी 100 साल की उम्र होने के बाद भी पूरी तरह से फिट हैं. वे बिना किसी परेशानी के अपना सारा काम कर रहे हैं.

क्या कोई इंसान 100 साल से भी ज़्यादा स्वस्थ जीवन जी सकता है? अगर वो जी सकता है तो कैसे. क्या उसके लिए किसी खास देश की किसी खास जगह पर रहना होगा या फिर कोई ऐसा खास चीज है. जिसे खाने के बाद इंसान 100 साल या उससे अधिक जी सकता है. ऐसे ही सवालों के जवाब पाने के लिए वैज्ञानिक लगातार रिसर्च कर रहे हैं. इस रिसर्च में वैज्ञानिक के सामने कई हैरान करने वाले तथ्य सामने आए हैं.

ब्राजील में 100 साल की उम्र की 3 बहनें

ब्राजील में तीन ऐसी ही बहने हैं जो 100 साल से अधिक की उम्र की है. जब वैज्ञानिकों ने उनकी उम्र को लेकर रिसर्च किया तो बहुत कुछ सामने आया, जो हमारे आपकी की लाइफ स्टाइल से मैच करता है. इन बहनों का नाम ज़ुलिना डी डेउस नुनेस (103 साल), जोराइडे डी डेउस मोटा (104 साल) और लेविटा डी डेउस नुनेस उम्र (109 साल) है. तीनों की संयुक्त उम्र की बात की जाए तो इन तीनों बहनों की उम्र 316 साल है. सबसे लंबे समय तक जीवित रहने वाली बहनों के रूप में उन्हें गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड का सर्टिफिकेट भी मिला है. ये सब करिश्मा हुआ है खानपान और एक्टिव लाइफस्टाइल से. इन्हीं दोनों चीजों को तीनों बहनों ने अपनी जिंदगी का मूलमंत्र बना लिया. जिस उम्र में लोग बिस्तर से उठ भी नहीं पाते और आखिरी सांसें गिन रहे होते हैं. उसी उम्र में ये तीनों बहनें निरोग हैं यानी बीमारी से दूर और खुशहाल जिंदगी से भरपूर भी.

लंबी उम्र की सामने आई वजहें

रिसर्च में वैज्ञानिकों ने पाया कि मजबूत आनुवंशिक कारक की वजह से ये तीनों बहनें 100 साल पार कर चुकी हैं. लंबी उम्र और जवान रहने के लिए लाइफस्टाइल में बदलाव भी जरूरी है. ये तीनों बहनें अपनी लंबी उम्र का श्रेय हेल्दी डाइट और एक्टिव लाइफस्टाइल को देती हैं. ज़ुलिना ने बचपन की यादें ताजा करते हुए बताया कि वे नदियों में तैरने और मछली पकड़ने में समय बिताती थीं.

इसके अलावा, ये बहनें बिल्कुल आम जिंदगी जीती थीं. लेविटा ने एक क्राफ्ट्स वुमन के तौर पर और बाद में एक टेलीविजन नेटवर्क में काम किया. जोराइडे ने नर्स के तौर पर काम किया और पांच बच्चों की परवरिश की, जबकि ज़ुलिना घर पर रहकर छह बच्चों की देखभाल करती थीं. लेविटा अपनी जिंदगी को बिना किसी पछतावे के देखती हैं.

प्रोसेस्ड फूड से दूरी बनाने में फायदा

लोग अक्सर कहते हैं अगर माता-पिता लंबी उम्र तक जिए, तो बच्चे भी लंबे समय तक जिएंगे. वैज्ञानिकों ने इस बात में कुछ सच्चाई जरूर पाई है. वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि 100 साल से



अधिक उम्र तक पहुंचने की संभावना में आनुवंशिक भूमिका होती है, लेकिन ये पूरी कहानी नहीं है. कई अध्ययनों के अनुसार, हमारी कुल जीवन अवधि का लगभग 20 से 30 प्रतिशत हिस्सा आनुवंशिक कारकों से प्रभावित हो सकता है, जबकि बाकी बड़ा हिस्सा जीवनशैली, पर्यावरण, स्वास्थ्य सेवाओं और संयोग जैसे कारकों पर निर्भर करता है यानी अच्छे जीन मदद कर सकते हैं, लेकिन वे अकेले पर्याप्त नहीं हैं. लंबे समय तक जिंदा रहने के लिए अच्छा खानपान जरूर होता है. लंबे समय तक जीवित रहने वाले व्यक्ति का भोजन बहुत साधारण होना चाहिए. अगर लंबा जीना है तो प्रोसेस्ड फूड से दूरी बनानी होगी. खाने की थाली में अधिकतर सब्जियां, फल, दालें, साबुत अनाज और सीमित मात्रा में पशु-आधारित भोजन शामिल होना चाहिए. कई लोग जरूरत से थोड़ा कम खाते है. वैज्ञानिकों का मानना है कि शरीर को लगातार जरूरत से ज्यादा कैलोरी देना कई बीमारियों का जोखिम बढ़ा सकता है.

लाइफस्टाइल में तुरंत कर लें ये चेंज

वैज्ञानिकों ने अपने शोध में पाया है कि पहले के अधिकांश लोग जिम नहीं जाते थे. रोजमर्रा के काम करते थे और पैदल ज्यादा चलते थे. वे खेती करते थे. घर का काम करते हुए सीढ़ियां चढ़ते थे. इससे उनकी जिंदगी में लगातार एक्टिविटी होती रहती थी. यही वजह थी कि लोग लंबा जीते थे. इसके साथ ही वैज्ञानिकों ने पाया कि लंबे समय तक जीने वाले लोगों में तनाव को संभालने की क्षमता बेहतर होती है.

इसका मतलब ये नहीं कि उनके जीवन में समस्याएं नहीं थीं. समस्याएं सबके जीवन में होती हैं. लेकिन लंबी उम्र तक जिंदा रहने वाले तनाव को हमेशा अपने ऊपर हावी नहीं होने देते थे और इसके लिए कुछ लोग प्रार्थना करते थे. कुछ ध्यान करते थे. कुछ लोग परिवार के साथ समय बिताते थे तो कुछ प्रकृति के बीच रहते थे. इसी वजह से पुराने समय में लोग कम बीमार होते थे और लंबा जीते थे.

इन जगहों के लोगों की उम्र होती है लंबी

वैज्ञानिकों ने दुनिया में कुछ ऐसे क्षेत्रों की पहचान की है जहां सामान्य आबादी की तुलना में अधिक लोग 100 वर्ष तक जीवित रहते हैं. इन क्षेत्रों को 'ब्लू ज़ोन' कहा जाता है.. वैज्ञानिकों ने जिन क्षेत्रों की पहचान की है वो हैं जापान का ओकिनावा, इटली का सार्डिनिया, ग्रीस का इकारिया, कोस्टा रिका का निकोया और अमेरिका का लोमा लिंडा. इन सभी जगहों पर रहने वाले लोगों की संस्कृति अलग-अलग है. लेकिन उनकी जीवनशैली में कई समानताएं मिलती हैं.

विज्ञान अभी भी उम्र बढ़ने के रहस्यों को पूरी तरह नहीं समझ पाया है. हर साल नई खोजें हो रही हैं. लेकिन आज तक जितने भी प्रमाण मिले हैं, वे एक ही बात की ओर इशारा करते हैं लंबी उम्र का कोई एक जादुई फॉर्मूला फिलहाल नहीं है. ये हजारों दिनों तक किए गए छोटे-छोटे सही निर्णयों का परिणाम हो सकता है.



देश में गहराता जल संकट, 60 करोड़ लोग प्यासे; गंदे पानी का रीसायकल ही आखिरी उम्मीद!

नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, भारत के लगभग 60 करोड़ लोग पानी की भयंकर कमी का सामना कर रहे हैं, जिसके कारण ग्रामीण महिलाओं को रोजाना कई किलोमीटर दूर से पैदल चलकर पानी लाना पड़ता है और शहरों का ग्राउंड वाटर लेवल तेजी से गिर रहा है. रिपोर्ट यह भी चेतावनी देती है कि साफ पानी न मिलने से देश में हर साल करीब 2 लाख लोग अपनी जान गंवा देते हैं.

भारत में गहराता जल संकट

भारत दुनिया में सबसे ज्यादा ग्राउंड वाटर का इस्तेमाल करने वाला देश है. यहां पूरी दुनिया के कुल इस्तेमाल का करीब 25% हिस्सा अकेले भारत में खर्च होता है. खासतौर पर उत्तर-पश्चिमी राज्यों में पानी का लेवल इतनी तेजी से गिर रहा है कि साल 2030 तक पानी की मांग, सप्लाई से दोगुनी हो जाएगी, जिससे फ्यूचर में एक बड़ा जल संकट पैदा हो सकता है. ऐसे में इस भयंकर संकट से निकलने का एकमात्र रास्ता '3R' (Reduce, Recycle, Reuse) नीति को अपनाना है.

पानी के संकट से बचाव के तरीके

वर्तमान समय में भारत से निकलने वाला कुल वेस्ट वाटर का केवल 28 से 30 प्रतिशत ही साफ हो पाता है. बाकी गंदा पानी नदियों में मिलकर उन्हें खराब कर रहा है. इस समस्या को दूर करने के लिए सरकार 'AMRUT' मिशन के तहत 34,467 करोड़ रुपये के भारी निवेश के साथ 889 सीवरेज प्रोजेक्ट्स पर काम कर रही है. इसका मकसद शहरों से निकलने वाले सीवेज को साफ करने के लिए बड़े प्लांट लगाना है, जिससे रोजाना करोड़ों लीटर पानी को दोबारा इस्तेमाल के लायक बनाया जा सके और हमारी नदियां भी साफ रहें.

क्या है वेस्ट वाटर रीयूज और इसके प्रकार ?

'वेस्ट वाटर रीयूज' का मतलब गंदे पानी को कचरा समझकर फेंकने के बजाय उसे साफ करके फिर से काम में लाना है. इसे दो तरह से किया जा सकता है. पहला ग्रे वाटर, जो हमारे नहाने, कपड़े धोने या बर्तन साफ करने से निकलता है. इसे साफ करना काफी आसान होता है. वहीं दूसरा ब्लैक वाटर है, जो टॉयलेट से निकलता है. इसे साफ करने के लिए थोड़ी बड़ी और एडवांस मशीनों की जरूरत पड़ती है. अगर हम इस पानी को सही से ट्रीट करें, तो यह किसी खजाने से कम नहीं है.

पानी का दोबारा इस्तेमाल कहां होगा ?

साफ किए हुए पानी को आप कई जगहों पर इस्तेमाल कर सकते हैं. इसका इस्तेमाल फैक्ट्रियों में मशीनों को ठंडा करने, पार्कों और बगीचों की सिंचाई करने या गाड़ियां धोने के काम में किया जा सकता है. खेतों में भी खाद और खिंचाई के लिए इस पानी का इस्तेमाल किया जा सकता है. ऐसा करने से टॉयलेट फ्लश करने या सफाई जैसे कामों के लिए पीने वाले साफ पानी को बर्बाद नहीं करना पड़ेगा. दुनिया के कई देश पहले से ऐसा काम कर रहे हैं और अब भारत भी इसी राह में आगे बढ़ रहा है.

आखिर जन सुराज पार्टी और लोजपा रामविलास के बीच पक रही सियासी खिचड़ी के निहितार्थ क्या हैं? समझिए





बिहार में जन सुराज पार्टी के नवनिर्वाचित विधायक प्रशांत किशोर और लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान के बीच जो राजनीतिक खिचड़ी पकने की चर्चा है, वह उत्तरप्रदेश की राजनीति से अभिप्रेरित है। चूंकि प्रशांत किशोर मशहूर चुनावी रणनीतिकार भी हैं और लगभग सभी प्रमुख पार्टियों के रणनीतिक घाटों की पानी का स्वाद चख चुके हैं, इसलिए उनसे जुड़ी इस आशय की चर्चा भी अनायास नहीं है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि सामाजिक न्याय क्रांति और मंडल बनाम कमंडल की मतलबी राजनीति की कड़ी में जहां उत्तरप्रदेश में चार-चार बार दलित नेत्री सुश्री मायावती को मुख्यमंत्री बनने का मौका मिला और उनकी बहुजन समाज पार्टी तीन बार गठबंधन के तहत और एक बार पूर्ण बहुमत से यूपी की सत्ता में आई। लेकिन बिहार में राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद, जदयू के हुक्मरान नीतीश कुमार ने लोजपा के राम विलास पासवान और उनके पुत्र चिराग पासवान को कभी पूर्ण रूप से उभरने ही नहीं दिया और गठबंधन में भी कमजोर बनाए रखा।

यही वजह है कि बिहार में नए जमाने की राजनीति के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने चिराग पासवान के साथ गठबंधन की सम्भवनाओं को हवा दिलवाकर बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, जनता दल यूनाइटेड के सुप्रीमो नीतीश कुमार और राष्ट्रीय जनता दल नेता तेजस्वी यादव के समक्ष एक तगड़ी चुनौती पेश करने की अपनी मंशा उजागर कर दी है। चिराग पासवान जिस तरह से खुद को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का हनुमान करार देते हैं, इससे उनकी भी बेचैनी बढ़ेगी हो।

यह ठीक है कि जन सुराज पार्टी और लोजपा रामविलास के बीच किसी औपचारिक गठबंधन की सार्वजनिक पुष्टि अभी तक नहीं हुई है। लेकिन अगस्त 2026 की ताजा राजनीतिक हलचल को देखें तो दोनों के बीच संभावित सियासी तालमेल की चर्चा को महज अफवाह मानकर खारिज करना भी जल्दबाजी होगी। क्योंकि हाल की रिपोर्टों में दोनों के करीब आने और भाजपा-राजद से अलग एक संभावित धुरी की चर्चा सामने आई है। इससे एनडीए की राजनीति में चिराग पासवान का रुतबा बढ़ना भी स्वाभाविक है। फिर भी यदि चिराग पासवान को दलित मुख्यमंत्री बनाने के स्वप्न प्रशांत किशोर यदि दिखाते हैं, या फिर उपमुख्यमंत्री

पद का भी सियासी चारा डालते हैं तो मिशन 2029 के संसदीय चुनाव और 2030 के विधानसभा चुनावों को लेकर एनडीए और महागठबंधन के हाथपांव फूलना स्वाभाविक है।

आइए अब यह समझने की कोशिश करते हैं कि आखिर इस मनोवांछित सियासी खिचड़ी में क्या-क्या पक रहा है? और इसके राजनीतिक स्वाद के मिजाज से इसके क्या क्या मायने हो सकते हैं-

पहला, लोजपा युवराज चिराग पासवान के लिए यह NDA के भीतर दबाव की राजनीति हो सकती है, क्योंकि चिराग पासवान पहले भी सीट बंटवारे और NDA के भीतर अपनी राजनीतिक हैसियत को लेकर स्वतंत्र रुख दिखाते रहे हैं। 2025 में भी उनके प्रशांत किशोर से संभावित संपर्क की खबरें सामने आई थीं। इसलिए सियासत में हर खुली हुई सम्भवनाओं और उससे बनने बिगड़ने वाली हवा से इंकार नहीं किया जा सकता है।

दूसरा, जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर के लिए लोजपा रामविलास प्रमुख चिराग पासवान एक महत्वपूर्ण सामाजिक-पॉलिटिकल पुल हो सकते हैं। ऐसा इसलिए कि

जन सुराज अपने को BJP और RJD—दोनों से अलग विकल्प के रूप में स्थापित करना चाहता है। अब बांकीपुर में किशोर की जीत ने उन्हें सिर्फ आंदोलनकारी नहीं, बल्कि क्षेत्रीय चुनावी ताकत के रूप में भी स्थापित किया है।

तीसरा, सबसे दिलचस्प संभावना है—'माइनस BJP, माइनस RJD' राजनीति। यानी कि ताजा राजनीतिक चर्चाओं में इसी तरह के पुनर्संयोजन की संभावना उठ रही है। इसका अर्थ होगा कि चिराग पासवान अपना दलित/पासवान प्रभाव और जन सुराज पार्टी अपना युवा, गैर-पारंपरिक तथा शहरी-मध्यवर्गीय आधार जोड़ने की कोशिश करे। दोनों ने यदि रणनीतिक रूप से सवर्णों को तरजीह दी तो भाजपा/कांग्रेस के लिए यह किसी झटके की तरह होगा।

लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि दोनों की राजनीतिक जरूरतें अलग अलग हैं। चाहे चिराग पासवान हों या

प्रशांत किशोर, दोनों अपना स्वतंत्र राजनीतिक स्पेस बढ़ाना चाहते हैं, साथ ही खुद को तीसरे विकल्प के रूप में स्थापित करना चाहते हैं। जहां चिराग पासवान NDA में रहते हुए अपना bargaining power बढ़ाना चाहते हैं, वहीं प्रशांत किशोर BJP और RJD दोनों से दूरी दिखाना चाहते हैं।

इस बात में कोई दो राय नही कि उत्तरप्रदेश के जाटवों के वोट बैंक के तरह ही बिहार में भी पासवान वोट का मजबूत आधार है, जबकि प्रशांत किशोर युवा, शिक्षित और बदलाव चाहने वाले मतदाताओं पर जोर देते हैं। वह संगठन और चुनावी नेटवर्क के कार्यसाधक हैं। उनमें नया राजनीतिक नैरेटिव गढ़ने और अभियान चलाने की अद्भुत क्षमता है। लिहाजा यहीं से असली सवाल पैदा होता है—क्या चिराग NDA के भीतर रहकर जन सुराज से तालमेल करेंगे, या भविष्य में कोई व्यापक वैकल्पिक मोर्चा बनेगा?

अलबत्ता, इन चर्चाओं में एक और बड़ा संकेत निहित है। वह यह कि प्रशांत किशोर अब केवल विधानसभा की राजनीति तक सीमित नहीं दिख रहे, बल्कि जन सुराज की नजर विधान परिषद के चुनावी क्षेत्रों पर भी बताई जा रही है। यानी संगठन को लगातार चुनावी मशीनरी में बदलने की कोशिश हो रही है।

दूसरी ओर चिराग पासवान ने भी हाल के दिनों में ऐसे मुद्दे उठाए हैं जिन पर सरकार/NDA के भीतर असहजता पैदा हो सकती है। उदाहरण के लिए, उन्होंने गत दिनों बिहार की शराबबंदी नीति की प्रभावशीलता पर खुलकर सवाल उठाया। यानी दोनों के बीच संभावित तालमेल का आधार केवल जातीय गणित नहीं, बल्कि 'एंटी-एस्टैब्लिशमेंट' और 'नया विकल्प' का राजनीतिक नैरेटिव भी बन सकता है।

मगर सबसे बड़ी अड़चन भी यही है। खासकर प्रशांत किशोर की राजनीति का मूल दावा ही है कि वे पारंपरिक राजनीतिक दलों के गठजोड़ से अलग व्यवस्था खड़ी करेंगे। 2025 में उन्होंने चिराग के साथ गठबंधन की संभावना को सार्वजनिक रूप से नकारते हुए कहा था कि उनका गठबंधन जनता के साथ है। इसलिए यदि आज दोनों के बीच नजदीकी बढ़ती है, तो इसे सीधा चुनावी गठबंधन मानने के बजाय 'रणनीतिक संवाद' समझना ज्यादा उचित होगा।

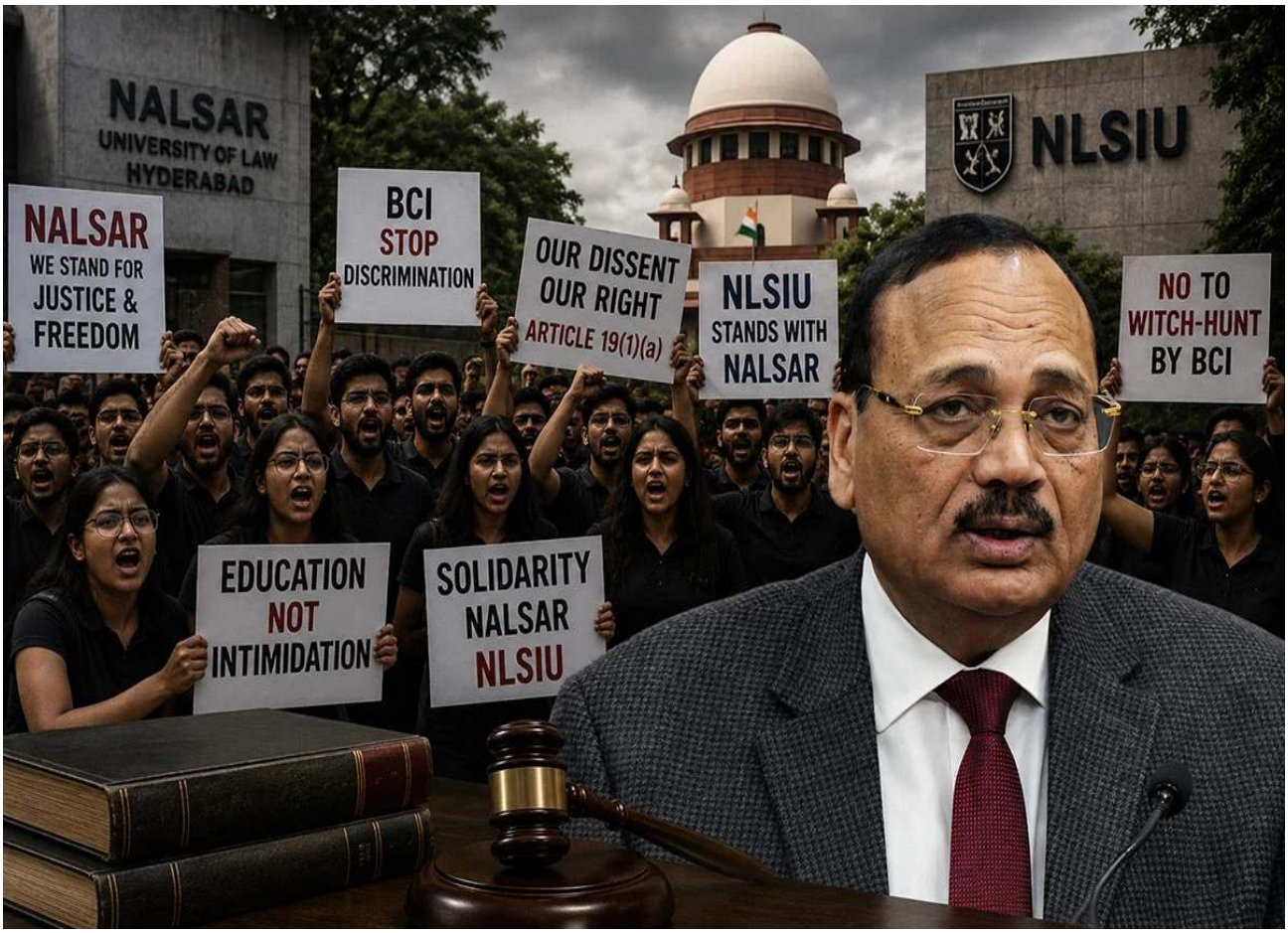
मेरी नजर में असली खेल के दृष्टिगत 2026 का गठबंधन कम और 2029–30 की जमीन तैयार करने की कवायद ज्यादा हो सकती है। वाकई यदि चिराग + जन सुराज साथ आते हैं तो बिहार में तीन ध्रुव उभर सकते हैं:- पहला, NDA बनाम RJD; दूसरा, महागठबंधन बनाम जन सुराज–LJP(RV जैसा वैकल्पिक ध्रुव। और यदि इस तीसरे ध्रुव में पप्पू यादव, उपेंद्र कुशवाहा या दूसरे छोटे सामाजिक आधार वाले नेता भी किसी रूप में जुड़ते हैं, तो बिहार की पारंपरिक दो-ध्रुवीय राजनीति के लिए यह गंभीर चुनौती बन सकती है।

इस परिस्थिति में सामान्य जातियों के वोटबैंक का महत्व और अधिक बढ़ जाएगा। क्योंकि यूपी में भी ओबीसी सियासत से ब्राह्मण परेशान होकर मायावती के साथ हो लिए थे। कुछ ऐसा ही उभार बिहार में भी नजर आ रहा है, खासकर सोशल मीडिया पर सवर्ण विरोधी पोस्टों की बाढ़।

फिलहाल सबसे महत्वपूर्ण संकेत यही है कि दोनों की तरफ से औपचारिक गठबंधन की घोषणा नहीं हुई है। इसलिए 'खिचड़ी पक रही है' कहना राजनीतिक संकेतों के लिहाज से उचित है, लेकिन 'खिचड़ी तैयार हो गई है' कहना अभी तथ्यात्मक रूप से जल्दबाजी होगी। शायद वह "बीरबल की खिचड़ी" न बन जाए।

CJI Surya Kant के प्रति बढ़ रही नाराजगी!

NALSAR के बाद NLSIU Bengaluru के छात्रों ने भी जताया विरोध, BCI President Manan Kumar Mishra पर भी उठे सवाल



देश की प्रतिष्ठित कानून यूनिवर्सिटियों के छात्रों की ओर से सीजेआई सूर्यकांत का बढ़ता विरोध हर किसी को चौंका रहा है क्योंकि देश के इतिहास में ऐसा घटनाक्रम पहले कभी देखने में नहीं आया। हम आपको बता दें कि हैदराबाद की NALSAR से उठी छात्रों की असहमति अब बेंगलुरु की NLSIU तक पहुंच गई है और देखते ही देखते यह मामला एक दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि के विरोध से कहीं बड़ा बन गया है। इस समय स्थिति यह है कि कानून यूनिवर्सिटियों के छात्र अब सीधे उन संस्थाओं और पदों की भूमिका पर सवाल उठा रहे हैं, जिन्हें कानून और न्याय की व्यवस्था का प्रहरी माना जाता है। इस पूरे घटनाक्रम के केंद्र में CJI सूर्यकांत को लेकर छात्रों की नाराजगी, BCI चेयरमैन मनन कुमार मिश्रा की विवादित कार्रवाई और उसके बाद छात्रों के पक्ष में खड़ी होती कानून की युवा पीढ़ी है। सवाल अब सिर्फ यह नहीं है कि दीक्षांत समारोह में कौन आएगा, बल्कि यह है कि क्या असहमति जताने वाले कानून के छात्रों को अपनी आवाज उठाने की कीमत अपने भविष्य से चुकानी पड़ेगी?

हम आपको याद दिला दें कि विवाद की शुरुआत NALSAR के छात्रों की उस आपत्ति से हुई, जिसमें उन्होंने विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत को मुख्य अतिथि बनाए जाने पर असहमति जताई। छात्रों की नाराजगी का संबंध 20 जुलाई को संसद की ओर हुए छात्रों के मार्च और उस दौरान कथित पुलिस ज्यादती से जुड़ी याचिकाओं की सुनवाई से था। छात्रों ने CJI की अध्यक्षता वाली पीठ के रुख को लेकर अपनी आपत्ति दर्ज कराई थी। हालांकि बाद

में उन्हीं मामलों में अदालत ने छात्रों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई पर रोक लगाई, वीडियो और CCTV फुटेज सुरक्षित रखने को कहा और स्वतंत्र जांच जैसे विकल्पों पर भी विचार किया।

इस बीच CJI सूर्यकांत ने स्वयं स्पष्ट कर दिया कि उन्होंने NALSAR का निमंत्रण स्वीकार ही नहीं किया था। उन्होंने कहा कि जब उन्होंने निमंत्रण स्वीकार नहीं किया तो उनके वहां जाने का सवाल ही नहीं उठता। यानी जिस विवाद ने इतना बड़ा रूप ले लिया, उसमें CJI की ओर से मुख्य अतिथि बनने की सहमति ही नहीं थी। लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं हुई। असली तूफान तब आया जब इस छात्र विरोध में बार काउंसिल ऑफ इंडिया यानी BCI कूद पड़ा।

13 अगस्त को BCI चेयरमैन मनन कुमार मिश्रा ने राज्य बार काउंसिलों को निर्देश दिया कि NALSAR के 2026 बैच के छात्रों का अधिवक्ता के रूप में नामांकन अगले आदेश तक रोक दिया जाए। BCI ने यह कदम उन छात्रों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान की जांच का हवाला देते हुए उठाया था। लेकिन यह आदेश कुछ ही घंटों में कानूनी बिरादरी और छात्रों के बीच भारी विरोध का कारण बन गया। सवाल उठा कि आखिर कुछ छात्रों के विरोध के जवाब में उनकी पूरी कक्षा के भविष्य को ही अधर में कैसे डाला जा सकता है?

विरोध बढ़ा तो BCI को पीछे हटना पड़ा। संशोधित आदेश में कहा गया कि अधिकांश छात्र निर्दोष हैं और कुछ लोगों के कथित आचरण के लिए पूरी कक्षा को दंडित नहीं किया जा सकता। बाद में मनन कुमार मिश्रा ने छात्रों से माफी भी मांगी। उन्होंने कहा कि उनके किसी शब्द या पत्र से छात्रों की भावनाएं आहत हुई हों तो उन्हें इसका खेद है और छात्रों की भावनाओं का सम्मान किया जाना चाहिए। लेकिन माफी के बाद भी सबसे बड़ा सवाल वहीं खड़ा रहा कि क्या BCI को ऐसा आदेश देने का अधिकार था?

यही वह बिंदु है जहां मामला महज विवाद से निकलकर कानून के दायरे में पहुंचता है। Advocates Act, 1961 के तहत BCI का काम कानूनी शिक्षा के मानक तय करना, अधिवक्ताओं के पेशेवर आचरण को नियंत्रित करना, अनुशासनात्मक व्यवस्था और राज्य बार काउंसिलों की निगरानी करना है। लेकिन अधिवक्ताओं के रूप में नामांकन राज्य बार काउंसिलों के अधिकार क्षेत्र में आता है। ऐसे में NALSAR के छात्रों का नामांकन रोकने का निर्देश BCI के अधिकार-क्षेत्र की सीमा को लेकर गंभीर सवाल खड़ा करता है। यहीं से विवाद ने एक नया रूप लिया।

बेंगलुरु के NLSIU के छात्रों और पूर्व छात्रों ने NALSAR के छात्रों के समर्थन में मोर्चा खोल दिया। 165 स्नातक छात्रों, 409 वर्तमान छात्रों और 128 पूर्व छात्रों सहित 700 से अधिक लोगों ने संयुक्त बयान जारी किया। उन्होंने NALSAR के छात्रों और शिक्षकों के प्रति बिना शर्त समर्थन जताते हुए अपने विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में CJI सूर्यकांत और BCI चेयरमैन मनन कुमार मिश्रा की उपस्थिति पर भी आपत्ति दर्ज कर दी।

NLSIU के छात्रों ने BCI से सार्वजनिक और बिना शर्त माफी की मांग की। उन्होंने छात्रों और शिक्षकों की पहचान बताने के निर्देश को "विच-हंट" बताते हुए कहा कि ऐसी कार्रवाई अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर डर पैदा कर सकती है। उनका तर्क है कि संविधान का अनुच्छेद 19(1)(a) नागरिकों को अपनी बात कहने का अधिकार देता है और किसी वैधानिक संस्था की शक्ति का इस्तेमाल असहमति दबाने के लिए नहीं किया जा सकता।

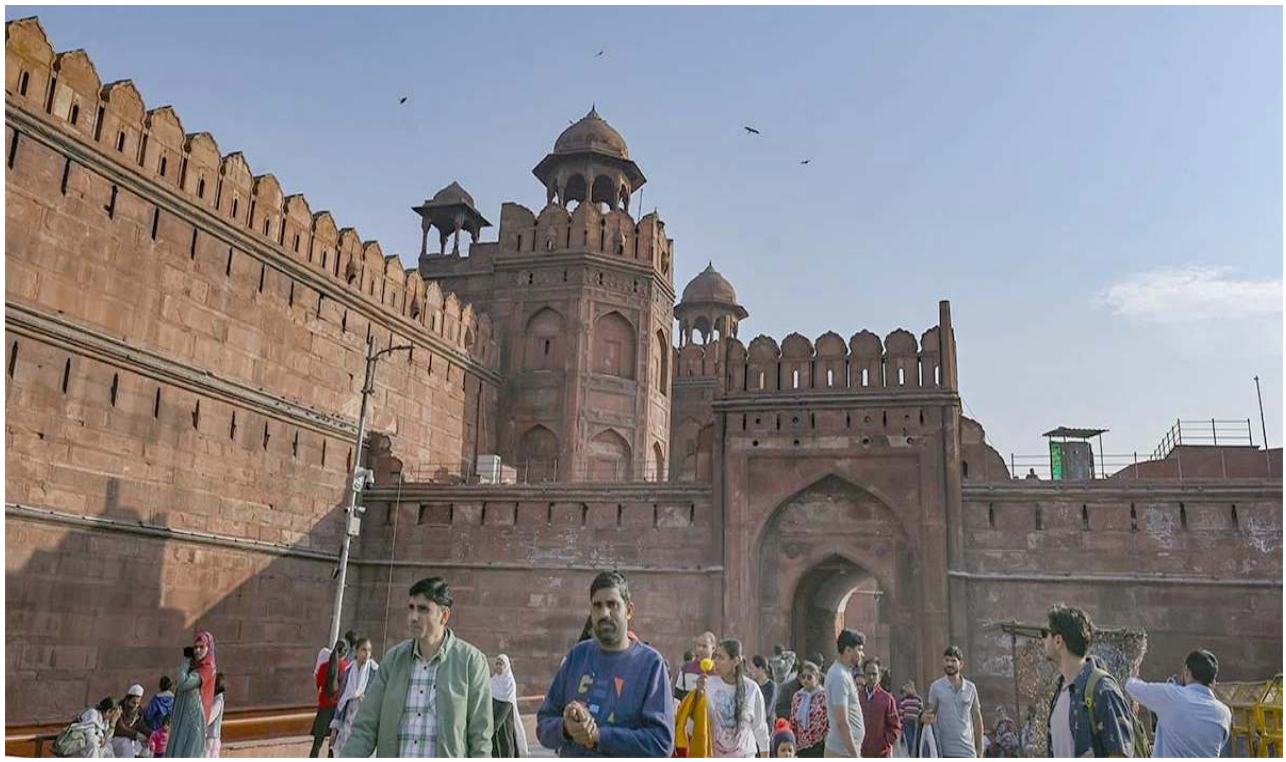
छात्रों ने BCI चेयरमैन मनन कुमार मिश्रा के पुराने बयानों पर भी सवाल उठाए। उन्होंने प्रदर्शनकारी छात्रों को लेकर उनकी कथित टिप्पणियों का हवाला देते हुए कहा कि इस तरह की भाषा ने कानूनी संस्थाओं में भरोसे को नुकसान पहुंचाया है। दूसरी ओर, मनन कुमार मिश्रा ने अब छात्रों को देश के सबसे जागरूक और विवेकशील युवाओं में बताते हुए कहा है कि शांतिपूर्ण विरोध लोकतंत्र का हिस्सा है और छात्रों को अपने फैसले स्वतंत्र रूप से लेने चाहिए।

इस पूरे विवाद का सबसे महत्वपूर्ण पहलू शायद यही है कि कानून पढ़ने वाले छात्र अब केवल कानून के दर्शक नहीं बने रहना चाहते। वे उस कानून को अपने ऊपर लागू होते हुए भी देख रहे हैं और उसी के आधार पर सवाल भी पूछ रहे हैं। NALSAR से NLSIU तक पहुंची यह आवाज इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आज के ये छात्र ही कल के वकील, वरिष्ठ अधिवक्ता, शिक्षक और न्यायाधीश होंगे। यदि कानून के संस्थानों से जुड़े सवालों पर सवाल उठाना ही अनुशासनहीनता मान लिया जाएगा, तो लोकतंत्र में असहमति की जगह कहां बचेगी?

उधर, BCI के लिए भी यह घटना आत्ममंथन का अवसर है। जिस संस्था पर देश में कानूनी पेशे के स्तर और अनुशासन को बनाए रखने की जिम्मेदारी है, उससे यह अपेक्षा स्वाभाविक है कि वह अपनी हर कार्रवाई को स्पष्ट वैधानिक अधिकार और संस्थागत प्रक्रिया के आधार पर ही करे। NALSAR प्रकरण ने दिखा दिया है कि कानून की सबसे बड़ी ताकत उसका अधिकार नहीं, बल्कि उस अधिकार का संयमित और न्यायपूर्ण इस्तेमाल है।

फिलहाल तस्वीर साफ है। एक तरफ देश की कानूनी व्यवस्था के शीर्ष पद हैं, दूसरी तरफ देश की प्रतिष्ठित कानून यूनिवर्सिटियों के छात्र। और इन छात्रों का संदेश भी उतना ही साफ है कि पद बड़ा हो सकता है, लेकिन संविधान उससे बड़ा है; संस्था शक्तिशाली हो सकती है, लेकिन कानून उससे ऊपर है।

जानिए, आखिर दिल्ली क्यों रहती है आतंकियों के निशाने पर?



आपको पता होगा कि 15 अगस्त और 26 जनवरी के मौके पर यानी राष्ट्रीय पर्वों दिल्ली अक्सर पाक परस्त आतंकियों के निशाने पर रहती है! ऐसा खुफिया जानकारियों से भी पता चलता है। ऐसा इसलिए कि नई दिल्ली सिर्फ भारत की राजधानी नहीं, बल्कि भारत की राजनीतिक, संवैधानिक और प्रतीकात्मक शक्ति का सबसे बड़ा केंद्र है। चूंकि राष्ट्रीय पर्व—15 अगस्त तथा 26 जनवरी—आतंकियों के लिए इसी प्रतीकात्मक महत्व को भुनाने और इसमें भागीदारी जताने वालों के बीच अधिकतम भयावह माहौल पैदा करने का षड्यंत्र रचा जाता है, इसलिए खुफिया व सुरक्षा एजेंसियां चौकस हो जाती हैं।

दरअसल, इस अहम मौके पर जगह जगह उमड़ने वाली भीड़ के बीच आतंकियों द्वारा अपने नापाक इरादों को पूरे करने के अवसर के रूप में देखा जाता है और इसी उद्देश्य से वो अमन-चैन के दुश्मन बन जाते हैं। भला हो एनआईए, खुफिया एजेंसियों और दिल्ली पुलिस का जो समय रहते ही उनके नापाक इरादों को ध्वस्त कर देती हैं। इस समय यह सवाल और गंभीर है, क्योंकि 13 अगस्त 2026 को सामने आई संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट ने नवंबर 2025 के Red Fort आतंकी हमले को AQIS (Al-Qaeda in the Indian Subcontinent) से आधिकारिक रूप से जोड़ा है।

पहला, दिल्ली पर हमला यानी पूरे भारत को संदेश: आतंकी संगठन केवल जान-माल का नुकसान नहीं चाहते, बल्कि उनका असली लक्ष्य अक्सर भय, प्रचार और राजनीतिक संदेश पैदा करना होता है। चूंकि दिल्ली में संसद, राष्ट्रपति भवन, प्रधानमंत्री कार्यालय, सुप्रीम कोर्ट, मंत्रालय, विदेशी दूतावास और राष्ट्रीय स्मारक जैसे संस्थान हैं। इसलिए यहां घटी हुई छोटी सी घटना का भी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रभाव बहुत बड़ा हो सकता है।

दूसरा, राष्ट्रीय पर्वों पर प्रतीकात्मक मूल्य बढ़ जाता है कई गुना: 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से

प्रधानमंत्री का राष्ट्र को संबोधन और 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह—ये दोनों भारत की राजकीय संप्रभुता और राष्ट्रीय एकता के सबसे बड़े सार्वजनिक प्रतीक हैं। इसीलिए सुरक्षा एजेंसियां वर्षों से मानती रही हैं कि Independence Day समारोह आतंकियों और उग्रवादी संगठनों के लिए "attractive target" हो सकते हैं। यानी आतंकियों की गणित कुछ ऐसी होती है: सामान्य दिन का हमला स्थानीय/क्षेत्रीय खबर, लेकिन राष्ट्रीय पर्व के दिन दिल्ली में हमला अंतरराष्ट्रीय सुर्खियां + राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक प्रभाव + सरकार की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल।

तीसरा, भीड़ और VVIP मौजूदगी: राष्ट्रीय समारोहों में हजारों लोग, VVIP/VIP, सुरक्षा बल, मीडिया और देश-विदेश के प्रतिनिधि मौजूद होते हैं। 15 अगस्त 2026 के Red Fort समारोह के लिए भी सुरक्षा व्यवस्था बेहद व्यापक है और दिल्ली में प्रवेश, यातायात, मेट्रो तथा संवेदनशील क्षेत्रों पर विशेष प्रतिबंध लगाए गए हैं। आतंकी संगठनों के लिए भीड़ का अर्थ होता है कि एक छोटी कोशिश भी बड़े पैमाने पर अफरा-तफरी पैदा कर सकती है।

चौथा, लाल किला स्वयं एक असाधारण प्रतीक है: लाल किला केवल ऐतिहासिक इमारत नहीं है। 15 अगस्त को प्रधानमंत्री का तिरंगा फहराना उसे आधुनिक भारतीय राष्ट्र-राज्य के सबसे शक्तिशाली प्रतीकों में बदल देता है।

इसीलिए Red Fort पहले भी आतंकवादी लक्ष्य रहा है। दिसंबर 2000 में वहां आतंकी हमला हुआ था। और नवंबर 2025 का हमला इस खतरे की आधुनिक अभिव्यक्ति था। अब संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में AQIS का नाम सामने आना इस पूरे मामले को और गंभीर बनाता है।

पांचवां, दिल्ली की एक और कमजोरी—बहुत बड़ा और खुला महानगरीय क्षेत्र: यह केवल Red Fort की सुरक्षा का प्रश्न नहीं है, बल्कि दिल्ली-NCR में रेलवे स्टेशन, मेट्रो नेटवर्क, बाजार, बस अड्डे, धार्मिक एवं पर्यटन स्थल, सरकारी संस्थान, भीड़भाड़ वाले सार्वजनिक स्थान और बहुत बड़ी संख्या में हैं। इसलिए किसी आतंकी संगठन के लिए केवल मुख्य समारोह को निशाना बनाना ही जरूरी नहीं होता। समारोह के आसपास किसी दूसरे संवेदनशील स्थान पर घटना करके भी भय का वातावरण बनाया जा सकता है। इसी कारण इस बार रेलवे हब और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर भी निगरानी बढ़ाई गई है।

छठा, राष्ट्रीय पर्व इसलिए भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि सुरक्षा व्यवस्था पहले से दिखाई देती है: यह एक दिलचस्प विरोधाभास है। 15 अगस्त और 26 जनवरी पर सुरक्षा सबसे ज्यादा होती है—लेकिन उसी कारण सुरक्षा की तैनाती, रास्ते, समारोह का स्थान और समय जैसी बहुत-सी चीजें सार्वजनिक रूप से ज्ञात भी होती हैं। इसलिए सुरक्षा एजेंसियां केवल समारोह स्थल की सुरक्षा नहीं करतीं, बल्कि पूरे शहर में layered security बनाती हैं। इस साल दिल्ली पुलिस ने बड़े पैमाने पर पुलिस बल, CCTV, ड्रोन, वाहन जांच और अन्य निगरानी उपाय बढ़ाए हैं।

सातवां, असली खतरा सिर्फ "बड़ा हमला" नहीं है: आज आतंकवाद की रणनीति भी बदल रही है। बड़े संगठित समूहों के बजाय छोटे, बिखरे हुए सेल, स्थानीय मददगार, डिजिटल संपर्क और कम लागत वाले हमले ज्यादा चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं। UN की हालिया रिपोर्ट में भी AQIS के बारे में छोटे और बिखरे हुए नेटवर्क तथा क्षेत्रीय लॉजिस्टिक/वित्तीय नेटवर्क की चिंता व्यक्त की गई है। इसका मतलब है कि केवल Red Fort की अभेद्य सुरक्षा पर्याप्त नहीं है। Intelligence + cyber monitoring + financial tracking + border intelligence + local policing + community intelligence—इन सभी को जोड़ना पड़ेगा।

लेकिन एक महत्वपूर्ण बात यह है कि अक्सर यह कहना सही नहीं होगा कि "हर 15 अगस्त या 26 जनवरी को दिल्ली पर हमला होने वाला है।" राष्ट्रीय पर्वों के आसपास सुरक्षा एजेंसियों द्वारा खतरे की आशंका को गंभीरता से लेना एक precautionary security doctrine है। 2026 में भी हाई अलर्ट और व्यापक सुरक्षा व्यवस्था इसी सावधानी का हिस्सा है। लेकिन नवंबर 2025 के Red Fort हमले और अब UN की AQIS attribution के बाद यह जरूर कहा जा सकता है कि दिल्ली के प्रतीकात्मक स्थलों को लेकर आतंकवादी संगठनों की रुचि को केवल काल्पनिक खतरा मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

समझिए सबसे बड़ा सवाल और जानिए जवाब

मेरे विचार से असली प्रश्न यह नहीं है कि "आतंकी दिल्ली को क्यों चुनते हैं?" बल्कि असली प्रश्न यह है कि- क्या भारत की राजधानी को केवल राष्ट्रीय पर्वों पर ही नहीं, बल्कि वर्ष के 365 दिनों में ऐसी बहुस्तरीय सुरक्षा मिल रही है जिसमें आतंकियों की योजना बनने से पहले ही उसका पता चल जाए? क्योंकि आतंकवाद के खिलाफ सबसे बड़ी जीत हमला होने के बाद हमलावर पकड़ना नहीं, बल्कि हमला होने से पहले साजिश को तोड़ देना है।0और 2026 में दिल्ली के संदर्भ में यही सबसे महत्वपूर्ण सुरक्षा चुनौती है।

दुनिया के सबसे बड़े तेल मार्ग पर अमेरिकी क जे का दावा!

Donald Trump के मैप पोस्ट से मचा महायुद्ध का हड़कंप



मंगलवार (18 अगस्त) को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक मैप की तस्वीर पोस्ट की, जिसमें स्ट्रेट ऑफ़ होर्मुज़ को 'अमेरिका का नया इलाका' बताया गया है। यह कदम ईरान के साथ इस अहम समुद्री रास्ते को लेकर चल रहे तनाव के बीच उठाया गया है। यह पोस्ट ऐसे समय में आया है जब ईरान स्ट्रेट ऑफ़ होर्मुज़ से जहाजों की आवाजाही पर रोक लगा रहा है; यह दुनिया भर में ऊर्जा की सप्लाई के लिए एक बहुत ज़रूरी समुद्री रास्ता है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने बिना किसी अतिरिक्त टिप्पणी के अपने 'ट्रुथ सोशल' प्लेटफॉर्म पर यह मैप शेयर किया। पिछले हफ़्ते ट्रंप ने कहा था कि वह 'बहुत जल्द' स्ट्रेट ऑफ़ होर्मुज़ को अमेरिका का इलाका घोषित कर देंगे।

होर्मुज़ बंद रहेगा: ईरान

इस बीच, ईरानी संसद के स्पीकर मोहम्मद बाघेरी ग़ालिबाफ़ ने कहा कि स्ट्रेट ऑफ़ होर्मुज़ समुद्री यातायात के लिए तब तक बंद रहेगा जब तक कि अमेरिका के साथ साइन किए गए 14-सूत्रीय समझौता ज्ञापन (MoU) में ईरान की सभी शर्तें पूरी नहीं हो जातीं। उन्होंने इसे विदेशी प्रतिबंधों और सैन्य अभियानों को पूरी तरह हटाने से जोड़ते हुए कहा कि रास्ता तभी खुलेगा।

ग़ालिबाफ़ ने कहा, "जब तक समझौता ज्ञापन में अमेरिका के वादे - जिसमें नाकेबंदी हटाना, फ्रीज़ की गई संपत्ति जारी करना, तेल पर प्रतिबंध हटाना, सभी मोर्चों पर धमकियों और सैन्य अभियानों को खत्म करना और अन्य शर्तें शामिल हैं जिन पर अमेरिका ने सहमति जताई थी - लागू नहीं किए जाते, तब तक 'स्ट्रेट' नहीं खोला जाएगा।"

दुश्मनों को और तनाव न बढ़ाने की चेतावनी देते हुए, स्पीकर ने ज़ोर देकर कहा कि इस्लामिक रिपब्लिक "दुश्मन की हरकतों और आक्रामकता के अनुपात में उसे और भी करारी हार देने के लिए तैयार है।"

ग़ालिबाफ़ ने कूटनीतिक प्रक्रिया का बचाव करते हुए कहा कि MoU के तहत सैन्य कार्रवाई रोकने से मिले समय ने देश की राष्ट्रीय सुरक्षा और घरेलू अर्थव्यवस्था को मज़बूत करने का एक अहम मौका दिया।

उन्होंने कहा, "बेशक, यह साफ़ करना ज़रूरी है कि नाकेबंदी हटाने और युद्धविराम के संबंध में समझौते से मिले मौके ने आर्थिक मज़बूती बढ़ाने और ईरान की रक्षा क्षमता को फिर से बनाने में बहुत मदद की।"

होर्मुज़ में जहाज़ पर हमला

यह घटना तब हुई जब स्ट्रेट ऑफ़ होर्मुज़ से गुज़र रहे एक जहाज़ पर किसी अज्ञात चीज़ (प्रोजेक्टाइल) से हमला हुआ, जिससे उसका इंजन रूम क्षतिग्रस्त हो गया और एक क्रू मेंबर घायल हो गया। यह जानकारी U K मैरीटाइम ट्रेड ऑपरेशन्स (UKMTO) ने दी है। UKMTO ने अपनी घटना रिपोर्ट में कहा, "कंपनी सिक्योरिटी ऑफिसर ने बताया है कि होर्मुज जलडमरूमध्य (Strait of Hormuz) से बाहर निकलते समय जहाज से एक अज्ञात चीज़ (प्रोजेक्टाइल) टकराई।"

इसमें आगे कहा गया कि इस टक्कर से जहाज के इंजन रूम को नुकसान पहुंचा और चालक दल के एक सदस्य की मौत हो गई। यह घटनाक्रम ऐसे समय में हुआ है जब बातचीत के लिए तय 60 दिन की अवधि खत्म होने वाली है, लेकिन तेहरान और वाशिंगटन के बीच मुख्य मतभेद अभी भी सुलझ नहीं पाए हैं। ईरान के लिए, होर्मुज जलडमरूमध्य से कमर्शियल ट्रैफिक का सामान्य होना इस बात पर निर्भर करता है कि नाकेबंदी हटाई जाए, सेनाएं वापस बुलाई जाएं और हर्जाने का भुगतान किया जाए।

आखिर बांकीपुर उपचुनाव भाजपा क्यों, कैसे और किसके चलते हारी? पूछता है बिहार!



बांकीपुर उपचुनाव 2026 में भाजपा की हार अब हर किसी को नहीं पच रही है। इसलिए लोग एक दूसरे से पूछ रहे हैं कि भाजपा क्यों हारी? कैसे पराजित हुई? और किसके चलते यह राजनीतिक दुर्दिन देखना पड़ा? बिहार वासी जानना चाहते हैं! क्योंकि 9 माह पहले ही तो उन्होंने जदयू नीत एनडीए गठबंधन को अभूतपूर्व बहुमत दिया था! अटकलें हैं कि क्या जदयू नेता और पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ हुई 'सियासी बदतमीजी' के बाद भाजपा अआखिर ब अकेले नहीं चल पाएगी, क्योंकि टीम नीतीश कुमार ने भारतीय जनता पार्टी के हवा-हवाई रणनीतिकारों को असली राजनीतिक जमीन पर तगड़ी पटकनी दिला डाली है!

जानकारों की मानें तो चाहे चिराग पासवान हों, जीतनराम मांझी हों या उपेंद्र कुशवाहा हों, या मुंह फुलाए सवर्ण भाजपाई, सबकी खामोशी या राजनीतिक बकवास दोनों भाजपा पर भारी पड़ गई। वह हो गया, जिसकी कल्पना शायद ही किसी ने की होगी! इसलिए ज्वलंत प्रश्न उठता है कि क्या "भाजपा केवल अपने सहयोगियों और सहयोगी दलों दोनों के भितरघात की वजह से हारी" है? क्योंकि ऐसे मतदान केंद्र जहां सहयोगी दल परंपरागत रूप से मजबूत रहे हैं, फिर भी वहां भाजपा को असामान्य रूप से कम वोट मिले हैं। खुद पार्टी और गठबंधन के नेताओं द्वारा दबी जुबान में ये बातें कहीं जा रही हैं, ताकि उनका महत्व बढ़े।

लिहाजा, सुलगते सवाल उठने लगे कि आखिर बिहार में पहली बार भाजपा का मुख्यमंत्री (CM) बनने के बाद हुए पहले ही बांकीपुर उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी उम्मीदवार को जिस प्रकार की तगड़ी शिकस्त का सामना करना पड़ा, वह पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आंतरिक युगलबंदी के खिलाफ किसी अंदरुनी राजनीतिक साजिश का द्योतक तो नहीं है!

चर्चा तो यहां तक हो रही है कि आनन-फानन में जिस तरह से पार्टी उम्मीदवार बदला गया, उस साजिश के पीछे केंद्रीय मंत्री अमित शाह की टीम में उपजे अंतर्विरोधों और आरएसएस से जुड़े दिग्गजों की परोक्ष भूमिका तो कहीं नहीं है, जो कि राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन की अव्यवहारिक पैराशूट नियुक्ति के बाद से ही अंदर ही अंदर खफा चल रहे थे और मौका मिलते ही उन्हें, उनकी ही जमीन पर असली जातीय और पार्टीगत दोनों राजनीतिक औकात दिखा दी!

ऐसा इसलिए कि जो पार्टी दुर्लभ से दुर्लभतम चुनाव जीत जाती है, वह आखिर अपने ही राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन द्वारा छोड़ी हुई इकलौती सीट, जिस पर गत 30 वर्षों से 'पिता-पुत्र' का कब्जा रहा हो, वह अचानक हार जाए। खुद पटना के पीढ़ी दर पीढ़ी वाले भाजपा समर्थक संभ्रांत लोग भी अचंभित रह गए हैं कि ये क्या हो गया? क्या 'लालू की नीति' दबे पांव वेश बदलकर उनके पुत्र तेज प्रताप यादव के शह पर पटना में आ गई? क्या सहयोगी दलों के कार्यकर्ताओं को अपेक्षित स्तर पर सक्रिय नहीं किया गया? क्या स्थानीय स्तर पर असंतोष या गुटबाजी को शांत नहीं किया गया? क्या उम्मीदवार चयन को लेकर नाराज़गी नहीं भांपी जा सकी? क्या विपक्ष के प्रभावी ध्रुवीकरण का अंदाजा भाजपा रणनीतिकार नहीं लगा पाए? क्या स्थानीय मुद्दे और सत्ता-विरोधी भावना प्रबल रही और मतदान प्रबंधन यानी बूथ मैनेजमेंट में कमी बरती गई?

उनका सीधा सवाल यह भी है कि आखिर पूर्व केंद्रीय मंत्री व भाजपा सांसद रविशंकर प्रसाद, जदयू सांसद और केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह, पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ सी पी ठाकुर (सांसद विवेक ठाकुर के पिता), राज्य सरकार के मंत्री रामकृपाल यादव और अशोक चौधरी के मोहल्लों से जुड़े मतदान केंद्रों पर भी भाजपा प्रत्याशी कैसे पिछड़े और प्रशांत किशोर वहां भी बढ़त बनाए रहे। राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के बूथ की भी यही स्थिति रही। आखिर यह सब सियासी प्रपंच कैसे और क्यों संभव हुआ? क्या मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को बदलने के लिए इतना बड़ा आत्मघाती षड्यंत्र सवर्णों के नेताओं ने अपने ही खिलाफ रच दिया? क्या किसी ने इस हेतु नई दिल्ली और नागपुर से इशारा भी किया था? बात पचने वाली तो बिल्कुल भी नहीं है।

सवाल है कि क्या आरएसएस और भाजपा के जमीनी तालमेल की कमी ही भाजपा के खराब प्रदर्शन का मुख्य कारण है। क्या भाजपा और उसके वैचारिक-संगठनात्मक नेटवर्क के बीच स्थानीय स्तर पर समन्वय में कमी रही? क्या उम्मीदवार चयन या स्थानीय असंतोष का प्रभाव पड़ा?

क्या विपक्ष ने नए सामाजिक और राजनीतिक समीकरण बनाए? क्या कम मतदान का असर भाजपा के पारंपरिक मतदाता आधार पर पड़ा?

सवाल यह भी है कि क्या जदयू के पूर्वमुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने द्वारा ही बनवाए हुए भाजपाई मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी से सियासी बदला ले लिया गया है? या फिर पूर्वमुख्यमंत्री व कृषि मंत्री विजय कुमार सिन्हा, और पूर्व कानून मंत्री व सांसद रविशंकर प्रसाद के अलावा ऋतुराज सिन्हा और संजय मयूख जैसे दिग्गज कायस्थ नेताओं ने निजी कारणों से भितरघात किया/कराया है? क्या लोजपा रामविलास के नेता व केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान का भी भाजपा को दिली सहयोग नहीं मिला? क्या उपेंद्र कुशवाहा की चुप्पी और जीतनराम मांझी और नागमणि जैसों के विषैले बोलों की कीमत भाजपा ने चुकाई है।

वहीं, राजनीतिक पंडितों का मानना है कि यूजीसी बिल विवाद, ओबीसी/दलितों को ज्यादा कानूनी तरजीह दिए जाने, हिंदुत्व को गफलत में रखने और राम मंदिर चंदा चोरी प्रकरण के अलावा भरत तिवारी एनकाउंटर प्रकरण आदि ने सवर्णों के बीच भाजपा की राजनीतिक साख को गहरी चोट

पहुंचाई है। आलम यह बताया गया है कि ओबीसी/दलित वोट बैंक भाजपा के साथ पूरी तरह से नहीं जुटा पाया है,जबकि सवर्णों का सजग तबका अपने बच्चों के भविष्य के खातिर भाजपा से दूर चला जा रहा है, या विकल्प ढूंढ रहा है। क्या जन सुराज पार्टी में वह विकल्प दिखाई दे चुकी है? क्या सवर्णों ने बीजेपी को धोखा दिया या ओबीसी और दलितों ने या फिर तीनों वर्गों के समृद्ध तबके ने?

देखा जाए तो बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में जन सुराज पार्टी के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने शोषित, दलित, पिछड़ों, अल्पसंख्यक समाज की राजनीति को धार देने की कोशिश तो की थी, पर कामयाबी नहीं मिली। लिहाजा, इस चुनाव में उन्होंने न केवल मुद्दे बदलते, बल्कि मोदी-शाह-सम्राट पर सीधे निशाना साधकर ही सफलता के इस मुकाम तक पहुंचे हैं। राजनीतिक पंडितों के मुताबिक, बिहार में भाजपा के लिए जन सुराज पार्टी अब एक वास्तविक चुनावी चुनौती बन चुकी है, जिसको राष्ट्रीय विस्तार पाते देर नहीं लगेगी। क्योंकि राष्ट्रीय राजनीतिक परिस्थिति यही चुगली कर रही है।

बांकीपुर उपचुनाव को प्रशांत किशोर ने व्यक्तिगत अभियान में बदल दिया था। उनकी पार्टी जन सुराज ने इस चुनाव को प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाया और प्रशांत किशोर ने स्वयं मैदान में उतरकर इसे हाई-प्रोफाइल मुकाबला बना दिया। इससे

विपक्षी वोटों का ध्रुवीकरण हुआ और भाजपा विरोधी मत नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव के राजद प्रत्याशी की ओर न जाकर अपेक्षाकृत अधिक एक दिशा में गए जिससे जनसुराज को विजयश्री मिली और भाजपा को नुकसान हुआ।

जहां तक एंटी-इनकंबेंसी की बात है तो बांकीपुर लंबे समय से भाजपा का गढ़ था, जहां लगातार एक ही दल के प्रतिनिधित्व से कुछ मतदाताओं में बदलाव की इच्छा पैदा हो गई प्रतीत होती है। इस चुनाव में स्थानीय मुद्दे भी हावी रहे। विपक्ष ने पूर्व घोषित उम्मीदवार के अकस्मात बदलाव, बूथ प्रबंधन, स्थानीय संगठन और मतदान प्रतिशत जैसे कारक को भी उछाला, जो निर्णायक भूमिका निभाए। जबकि शहरी मतदाता का बदलता रुझान भाजपा पर भारी पड़ गया। शिक्षित और युवा मतदाताओं ने परिवर्तन के पक्ष में मतदान किया, क्योंकि यूजीसी बिल का सर्वाधिक प्रभाव उन्हीं पर पड़ता। इसलिए इन बातों का प्रभाव परिणाम पर पड़ा है।

पहले सीजेपी द्वारा केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे स्वीकार करवाना और अब जेएसपी के प्रशांत किशोर द्वारा भाजपा का मजबूत गढ़ तोड़ दिया जाना बहुत कुछ संकेत दे रहा है, जो यह साबित करता है कि उनकी पार्टी केवल वैचारिक मंच नहीं, बल्कि चुनाव जीतने की क्षमता भी रखती है। वहीं, अब बिहार और देश की राजनीति में त्रिकोणीय मुकाबले की संभावना बढ़ चुकी है, क्योंकि जन सुराज पार्टी अब एक स्थायी ताकत बन चुकी है। भविष्य के चुनावों में मुकाबला केवल एनडीए बनाम महागठबंधन तक सीमित नहीं रह सकता, बल्कि तीसरा गुट भी बनेगा।

यही नहीं, भाजपा को अब अपने पारंपरिक शहरी और सवर्ण वोट बैंक की समीक्षा भी करनी पड़ेगी, क्योंकि उसके शहरी गढ़ में ही सेंध लगी है। लिहाजा पार्टी यह जानने का प्रयास अवश्य करेगी कि क्या पराजय का कारण उम्मीदवार बदलने से उपजा अंदरूनी रोष, संगठन की अंदरुनी खींचातानी, स्थानीय मुद्दे या मतदाताओं की प्राथमिकताओं में बदलाव तो नहीं था। क्या बिहार में संगठन बनाम चेहरे की बहस तेज होगी।

यहां पर यह चर्चा भी होगी कि क्या मजबूत संगठन हमेशा निर्णायक है, या प्रभावशाली स्थानीय नेतृत्व और अभियान भी स्थापित दलों को चुनौती दे सकते हैं? क्या भाजपा 2030 के विधानसभा चुनाव की रणनीतियाँ बदल सकती है? क्या सभी प्रमुख दल उम्मीदवार चयन, सामाजिक समीकरण, शहरी मतदाताओं और युवा वोटरों को लेकर अपनी अपनी रणनीति की समीक्षा करेंगे? इसलिए, बांकीपुर का परिणाम केवल एक सीट का परिणाम नहीं माना जाएगा; बल्कि इसे बिहार की बदलती राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के संकेत के रुप में भी देखा जाएगा।

भाजपा की हार के पीछे निम्नलिखित संभावित कारण हो सकते हैं, जैसे: एक, परंपरागत भाजपा मतदाताओं के एक हिस्से का जन सुराज की ओर जाना। दो, शहरी, युवा और बदलाव चाहने वाले मतदाताओं का रुझान बदलना। तीन, कम मतदान प्रतिशत का भाजपा के संगठनात्मक लाभ को कम कर देना। और चार, उम्मीदवार, स्थानीय मुद्दे और चुनावी रणनीति का प्रभाव। चूंकि एग्जिट पोल और कुछ चुनाव-पूर्व विश्लेषणों में यह दावा किया गया था कि सवर्ण मतों का एक हिस्सा प्रशांत किशोर की ओर जाने के संकेत हैं, वह बात अब सच प्रतीत होती है।

बताया जाता है राष्ट्रीय अध्यक्ष की सोच व समझ पर भी इस चुनाव का असर पड़ेगा, क्योंकि बांकीपुर जैसी लंबे समय से भाजपा की सीट के उनके हाथ से निकलते ही संगठन की चुनावी रणनीति, उम्मीदवार चयन और स्थानीय नेतृत्व पर सवाल उठ चुके हैं। लेकिन केवल एक उपचुनाव की हार से राष्ट्रीय अध्यक्ष की स्थिति पर बड़ा असर पड़ना तय नहीं माना जाता। पार्टी आमतौर पर कई चुनावों के समग्र प्रदर्शन के आधार पर ही संगठनात्मक निर्णय लेती है।

जहाँ तक मुख्यमंत्री पर असर की बात है तो, चूँकि यह चुनाव राज्य सरकार के कार्यकाल के दौरान हुआ है, इसलिए विपक्ष इसे सरकार के कामकाज पर जनमत के रूप में पेश कर सकता है। चूंकि हार का अंतर बड़ा है और भाजपा के पारंपरिक क्षेत्रों में भी गिरावट दिखी है, इसलिए सरकार की रणनीति, संगठन और सामाजिक समीकरणों की समीक्षा हो सकती है।

वहीं आगामी बिहार विधानसभा चुनाव पर भी इसका असर पड़ेगा, क्योंकि यह परिणाम व्यापक जनरुझान का संकेत प्रतीत होता है, जो भाजपा और एनडीए को उम्मीदवार चयन, सामाजिक गठबंधन, स्थानीय मुद्दों और चुनावी संदेश में बदलाव करने की जरुरत की चुगली कर रहा हैं। वहीं, यदि इसे केवल स्थानीय परिस्थितियों वाला परिणाम माना जाता है, तो इसका प्रभाव सीमित भी रह सकता है।

इसलिए बांकीपुर के परिणाम ने राजनीतिक संदेश अवश्य दिया है, लेकिन राष्ट्रीय अध्यक्ष या मुख्यमंत्री की स्थिति पर उसका वास्तविक प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि पार्टी नेतृत्व इस हार के कारणों का क्या आकलन करता है और आने वाले चुनावों में उसका प्रदर्शन कैसा रहता है। इतना तय है कि भाजपा की चुनावी हार आमतौर पर कई सामाजिक, राजनीतिक और संगठनात्मक कारणों के संयुक्त प्रभाव के चलते हुई है।

चूंकि भाजपा का पारंपरिक वोट अपेक्षा से कम निकला है, इसलिए संगठनात्मक समन्वय, बूथ प्रबंधन और कार्यकर्ताओं की सक्रियता पर सवाल उठते हैं। भाजपा ने बूथ स्तर पर व्यापक संगठनात्मक तैयारी की थी और बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं को लगाया था। फिर भी इस चुनाव में कम मतदान, त्रिकोणीय मुकाबला, युवा मतदाताओं का रुझान, स्थानीय मुद्दे और विपक्ष की रणनीति जैसे कई अन्य कारकों के चलते उसे पराजय का सामना करना पड़ा।



चीन का 'बिजली बम'! अकेला ड्रैगन अब बना रहा दुनिया की सबसे ज्यादा पावर, 1985 में अमेरिका से था कोसों दूर

साल 1985 का वो दौर याद कीजिए जब अमेरिका दुनिया की सबसे बड़ी ताकत हुआ करता था और बिजली बनाने के मामले में चीन से पूरे छह गुना आगे था. लेकिन पिछले चार दशकों में ड्रैगन ने जो चाल चली है, उसने पूरी दुनिया के शक्ति संतुलन को हिलाकर रख दिया है. साल 2025 के ताजा आंकड़े बता रहे हैं कि चीन अब इतना बड़ा पावर हाउस बन चुका है कि वह अकेले अमेरिका, पूरे यूरोपियन यूनियन और भारत को मिलाकर भी उनसे 13 प्रतिशत ज्यादा बिजली पैदा कर रहा है. आइए आसान भाषा में समझते हैं कि चीन ने यह करिश्मा आखिर कैसे कर दिखाया.

1985 से 2025: 40 सालों का खौफनाक बदलाव

साल 1985 में अमेरिका लगभग 2,657 Terawatt-hours (TWh) बिजली बनाता था जबकि चीन सिर्फ 410 TWh पर अटका था. लेकिन 2025 आते-आते यह तस्वीर पूरी तरह से उलट गई. आवर वर्ल्ड इन डेटा के मुताबिक 2025 में चीन का बिजली उत्पादन 10,583 TWh तक पहुंच गया. दूसरी तरफ अमेरिका, यूरोपियन यूनियन और भारत तीनों मिलकर भी सिर्फ 9,398 TWh बिजली ही बना पाए. इसका सीधा मतलब यह है कि चीन इन तीनों महाशक्तियों के कुल जोड़ से भी 1,184 TWh ज्यादा बिजली पैदा कर रहा है.

चीन ने अमेरिका को पीछे कब छोड़ा

चीन का यह सफर रातों-रात तय नहीं हुआ. तेजी से हुए औद्योगीकरण, शहरों के विकास और आर्थिक बढ़त के कारण चीन ने साल 2011 में ही अमेरिका को पछाड़कर दुनिया के सबसे बड़े बिजली उत्पादक का दर्जा हासिल कर लिया था. 1985 के मुकाबले चीन का बिजली उत्पादन आज 25 गुना से भी ज्यादा बढ़ चुका है, जो इतिहास में किसी भी देश का सबसे तेज विस्तार माना जाता है.

कोयला आज भी है चीन की असली ताकत

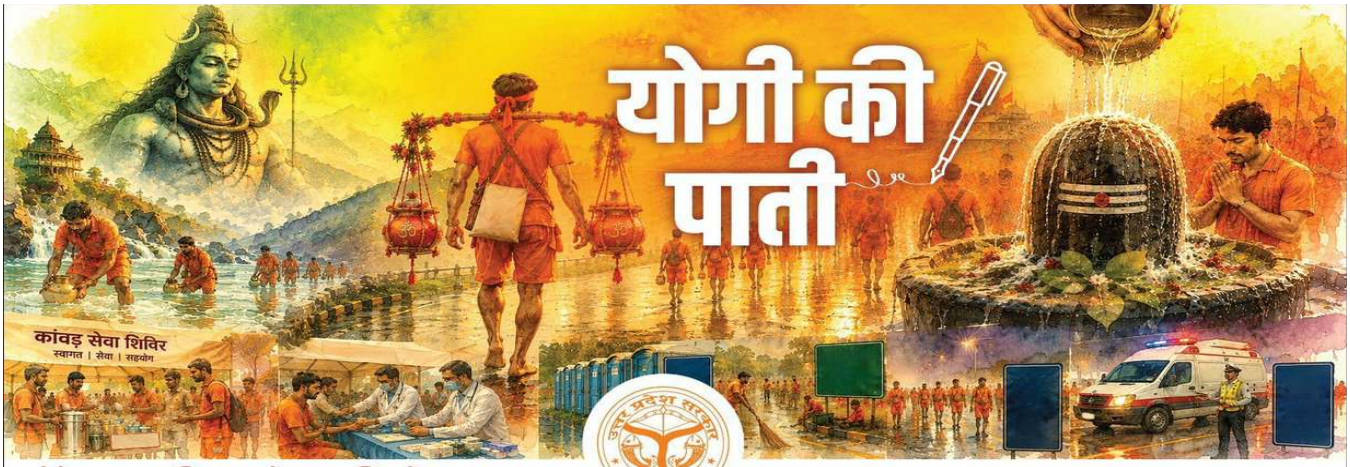
भले ही चीन आज सोलर और विंड पावर में दुनिया का लीडर बन चुका है, लेकिन उसकी रीढ़ की हड्डी आज भी कोयला ही है. आंकड़ों के अनुसार चीन अपनी कुल बिजली का लगभग 62 प्रतिशत हिस्सा आज भी कोयले से ही पैदा करता है. यही वजह है कि ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में भी चीन का नाम सबसे ऊपर आता है.

ग्रीन एनर्जी और न्यूक्लियर में भी भारी निवेश

कोयले के साथ-साथ चीन ने सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और परमाणु ऊर्जा में भी अरबों डॉलर का निवेश किया है. चीन के पास 55 से ज्यादा चालू न्यूक्लियर रिएक्टर हैं और दर्जनों पर काम चल रहा है. इसके अलावा चीन के पास 425 GW से ज्यादा सोलर और 376 GW से ज्यादा विंड पावर की स्थापित क्षमता मौजूद है, जो दुनिया में सबसे ज्यादा है.

आखिर इतनी बिजली की जरूरत क्यों पड़ी

चीन में बिजली की यह खपत अचानक नहीं बढ़ी है. इसकी सबसे बड़ी वजह वहां का विशाल मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर है जो पूरी दुनिया के लिए सामान बनाता है. इसके अलावा अब चीन में डेटा सेंटर, क्लाउड कंप्यूटिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का तेजी से विस्तार हो रहा है, जिन्हें चलाने के लिए विशाल मात्रा में बिजली की जरूरत पड़ रही है. चीन ने अपने पूरे देश को हाई-वोल्टेज ग्रिड से जोड़ दिया है जिससे बिजली बिना रुके हर कोने तक पहुंचती है.



मेरे सम्मानित प्रदेशवासियों,

भारतीय परंपराओं में कुछ यात्राएं धार्मिक अनुष्ठान मात्र नहीं होतीं, अपितु वे समाज, संस्कृति, अनुशासन एवं लोकजीवन की जीवंत पाठशाला भी बन जाती हैं। **श्रावण में निकलने वाली कांवड़ यात्रा ऐसी ही एक अनुपम परंपरा है,** जो प्रत्येक वर्ष करोड़ों श्रद्धालुओं को शिवभक्ति के सूत्र से जोड़ती है।

इस यात्रा में **हर शिवभक्त की पहचान एक होती है-कांवड़िया। भगवा वस्त्र, कंधे पर कांवड़ और हृदय में भोलेनाथ के प्रति अटूट श्रद्धा। पैंदल चलते कदम अलग हो सकते हैं, लेकिन सबका लक्ष्य एक ही है-महादेव का जलाभिषेक।** यहां जाति, वर्ग, भाषा, क्षेत्र अथवा आर्थिक भेद गौण हो जाते हैं। कांवड़ यात्रा समरसता का महापर्व है और यही सनातन संस्कृति के समभाव का जीवंत उदाहरण भी है।

समुद्र मंथन के समय भगवान शिव ने सृष्टि की रक्षा के लिए अपने कंठ में हलाहल धारण किया और नीलकंठ कहलाए। उस विष की उष्णता को शांत करने के लिए देवताओं ने उनका गंगाजल से अभिषेक किया। तभी से श्रावण मास में गंगाजल अर्पित करने की परंपरा विशेष पुण्यदायी मानी जाती है। कांवड़ यात्रा तप, सेवा, आत्मसंयम और परस्पर सहयोग का संदेश देती है। **तप से चरित्र दमकता है, सेवा से समाज संवरता है और एकता से राष्ट्र निखरता है।**

जब मैं अनेक शिवभक्तों को देखता हूं, जिनमें कई दिव्यांग भी होते हैं, जो कठिनाइयों की चिंता किए बिना कांवड़ लेकर पूरे उत्साह से यात्रा पूर्ण करते हैं तो मन श्रद्धा से भर उठता है। **श्रद्धालुओं का अटूट विश्वास और समर्पण कांवड़ यात्रा की सबसे बड़ी शक्ति है।**

प्रत्येक शिवभक्त की यात्रा सम्मानपूर्ण ढंग से संपन्न हो, इसके लिए प्रदेश सरकार कृतसंकल्पित है। **कांवड़ियों के स्वागत में पुष्पवर्षा की व्यवस्था की गई है तथा यात्रा मार्गों पर स्वच्छता सुनिश्चित की गई है।** व्यवस्थित शिविर, शुद्ध पेयजल, चिकित्सकीय सहायता, शौचालय, प्रकाश व्यवस्था, प्रभावी यातायात प्रबंधन तथा नियंत्रण कक्ष से सतत निगरानी के माध्यम से यात्रा को सुचारु बनाया गया है।

मैं आप सभी से आग्रह करता हूं कि कांवड़ यात्रा को सामाजिक उत्तरदायित्व और सेवा का उत्सव बनाएं। पर्यावरण-अनुकूल कांवड़ अपनाएं तथा प्लास्टिक-मुक्त जीवन का संकल्प लें। यदि मार्ग में एंबुलेंस अथवा विद्यालय वाहन जा रहा हो, तो उसे प्राथमिकता दें। **हमारी छोटी-सी सजगता किसी के लिए बड़ी सहायता बन सकती है।**

सरकार आपकी सुविधा और सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है, किंतु **इस पावन परंपरा की गरिमा बनाए रखना हम सभी का दायित्व है।** श्रद्धा, अनुशासन, संयम और सेवा का यही भाव कांवड़ यात्रा की आत्मा है और भगवान शिव के लोकमंगल का वास्तविक संदेश भी।

आपका

योगी आदित्यनाथ



श्रद्धालुओं के साथ सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

आप और आपके परिवार पर,
भक्ति, प्रेम और सौहार्द का दीप जलाएं।
हमारी संस्कृति, हमारी पहचान,
हमारा गौरव, हमारी शान।

आप सभी को

विकसित भारत
मजबूत भारत
आत्मनिर्भर भारत





श्री कृष्ण जन्माष्टमी
की हार्दिक शुभकामनाएं

हरतालिका तीज
की हार्दिक शुभकामनाएं



गणेश चतुर्थी
की हार्दिक शुभकामनाएं



विश्वकर्मा पूजा
की हार्दिक शुभकामनाएं



श्री कृष्ण जन्माष्टमी हमें भक्ति और धर्म का मार्ग दिखाती है।
हरतालिका तीज सौभाग्य और समर्पण का प्रतीक है।
गणेश चतुर्थी हर्ष शुरुआत और बुद्धि का संदेश देती है,
और विश्वकर्मा पुजा हमें कर्म और कौशल
के महत्व की याद दिलाती है।
आइए इन पावन पर्वों को मिलकर
हर्षोल्लास और एकता के साथ मनाएं।

सभी को हार्दिक शुभकामनाएं!



अजय कुमार शर्मा
जिला पंचायत सदस्य
संत कबीर नगर